प्रकाशन की तिथि 01.10.2018

ओ३म्

शुद्धि समाचार

एक प्रति मूल्य : रु० 10.00

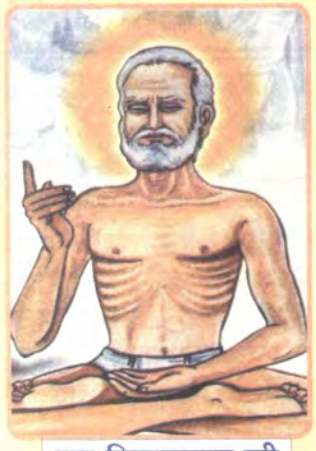

गुरु विरजानन्द जी

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक

वर्ष 41 अंक 10

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 500 रुपये

अक्टूबर-नवम्बर 2018 विक्रम सम्वत् 2075 आश्विन-कार्तिक

सनातन धर्मी नेता – पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23857244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री चतर सिंह नागर ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान शुद्धि हेतु हुआ था। शुद्धि कार्य निरन्तर करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

पं. लेखराम

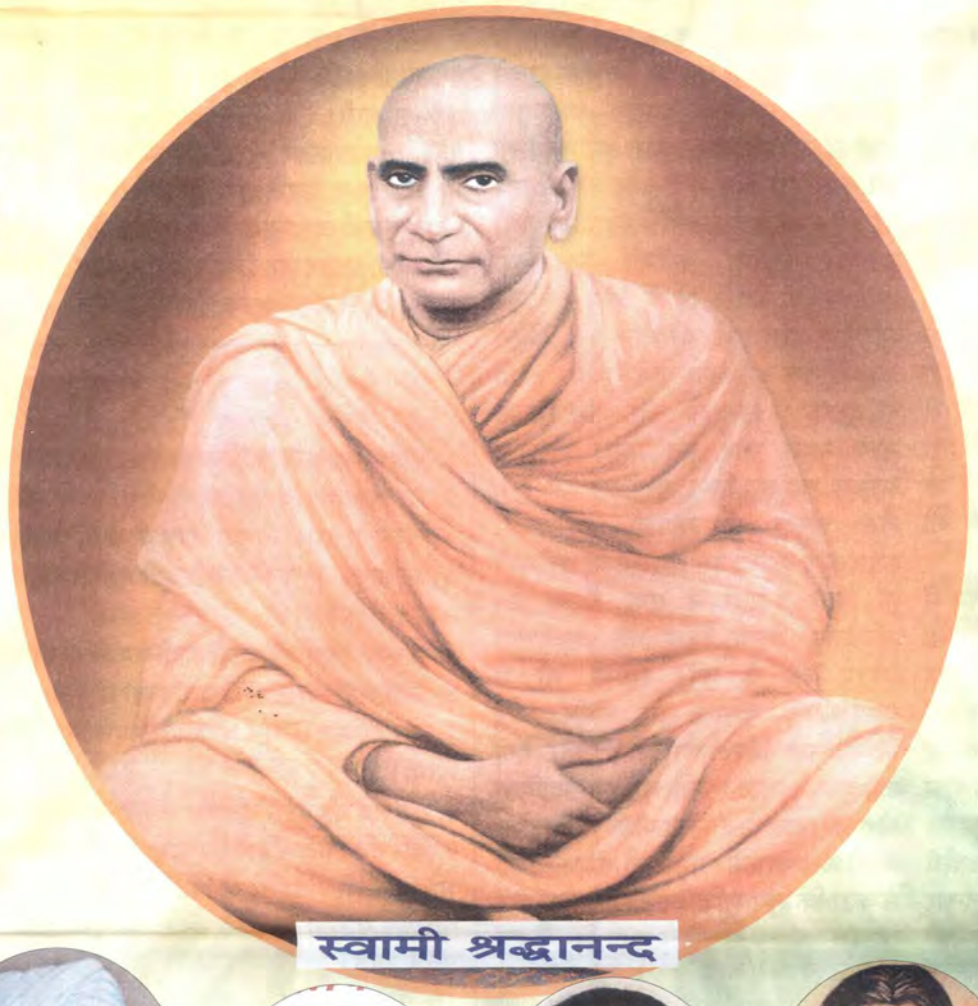

स्वामी श्रद्धानन्द

पं. मदनमोहन मालवीय

महात्मा हंसराज जी

श्यामजी कृष्ण वर्मा

भाई परमानन्द

लाल लाजपतराय

वीर सावरकर

पं. रामप्रसाद बिस्मिल

बाल हकीकतराय

फतेह सिंह – जोरावर सिंह

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
25 से 28 अक्टूबर 2018
दिल्ली

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में भारत की राजधानी नई दिल्ली में आयोजित

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

25, 26, 27, 28 अक्टूबर, 2018

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आयोजन स्थल –
स्वर्ण जयन्ती पार्क,
सैक्टर 10
रोहिणी, दिल्ली

स्वागतकर्त्ता :

नरेन्द्र मोहन वलेचा
प्रधान

चतर सिंह नागर
महामंत्री

आर्य महासम्मेलन में सभी आर्यों का स्वागत एवं अभिनन्दन ।

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के ९५वें स्थापना वर्ष पर विशेषाँक

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि सभा की स्थापना क्यों की ? कारण और निवारण

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का जन्म ऐसे समय हुआ था, जब इस देश के लोग एक ओर–अंग्रेजी दासता और अंग्रेजों के निर्मम अत्याचारों से त्रस्त थे, दूसरी ओर कट्टरपंथी मुस्लिम संगठनों और ईसाई मिशनरियों द्वारा हिन्दुओं को बलात् मुसलमान और ईसाई बनाया जा रहा था। हिन्दू समाज के ठेकेदार, अंधविश्वासी दिशाहीन पंडित, उस समय यदि कोई भूलकर भी किसी मुसलमान या ईसाई के घर पानी पी लेता था अथवा उसकी किसी बहन बेटियों को सहमति से मुसलमान बना लेते थे, तो वे पुनः उसको हिन्दू समाज में वापिस लेने को तैयार नहीं होते थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का पूर्व नाम महात्मा मुन्शीराम तथा बचपन का नाम बृहस्पति था। पिता श्री नानक चन्द जी पुलिस कोतवाल ने बरेली प्रवास के दौरान श्री मुन्शीराम जी का सम्पर्क महर्षि दयानन्द जी सरस्वती से कराया। श्री मुन्शीराम जी घोर नास्तिक व कुसंगतों में फँसे हुये थे। इसकी स्वीकारोक्ति स्वयं श्री मुन्शीराम जी ने महर्षि देव दयानन्द जी के सम्मुख की थी। स्वतः प्रमाण आत्म–कथा 'कल्याण मार्ग के पथिक' में मिलता है। स्वामी दयानन्द जी द्वारा शंका–समाधान करने के बाद संशय के बादल छट गये और श्री मुन्शीराम जी वैदिक पथ पर दौड़ चले।

बेटी वेद कुमारी ने विद्यालय में सिखाया हुआ यह भजन सुनाया "ईसा ईसा बोल, तेरा क्या लागेगा मोल और ईसा मेरा राम रमैया, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया" तो पिता श्री मुन्शीराम जी भौचक्क रह गये। उन्होंने विचार किया कि यदि मुझ जैसे वेदानुयायी के घर में ईसा ने घुसपैठ करली है तो सामान्य हिन्दू का घर कैसे सुरक्षित रह सकता है। तत्काल जालन्धर में प्रथम वैदिक कन्या पाठशाला की स्थापना की और दोनो बेटियों को उसमें पढ़ाया। तत्पश्चात संकल्पशील श्री मुन्शीराम ने गुरुकुल कांगड़ी सहित नौ (9) गुरुकुलों की स्थापना करके पाश्चात्य शिक्षा को चुनौती दी और देश में व्यापक 5 मकारः मैकाले, मेक्समूलर, मिशनरीज, मनीपावर और मिलिट्री के उत्तर में 5 सकारः स्वधर्म, स्वदेशी, स्वभाषा, स्वाभिमान और स्वतन्त्रता की स्थापना हेतु अथक प्रयास किया। प्रमाण उनके पुत्र श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति द्वारा लिखित पुस्तक "मेरे पिता" श्री मोहनदास करमचन्द गाँधी जी जब अफ्रीका से आकर गुरुकुल कांगड़ी में पधारे तो श्री मुन्शीराम जी ने उन्हें धन राशि के अलावा, महात्मा गाँधी नाम से सम्बोधित किया। गुरुकुल काँगड़ी व अन्य गुरुकुलों का प्रबंधन योग्यआचार्यों को सौंपकर, 1917 में काँगड़ी स्थित मायापुर वाटिका में बिना दीक्षा गुरु बनाये, अग्नि को साक्षी करके संन्यास आश्रम में प्रवेश किया और अपना नाम स्वयं श्रद्धानन्द रखा। यह शायद–विश्व का पहला उदाहरण है। इसके बाद स्वामी श्रद्धानन्द स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद गये और महात्मा गाँधी जी, लाला लाजपतराय जी के साथ कांग्रेस अधिवेशनों आदि समारोहों में योगदान करने लगे।

सन् 1919 तक विशेषकर रौलेट एक्ट के विरोध और जामा मस्जिद के मिम्बर पर तहरीर के समय तक) स्वामी जी हिन्दू मुस्लिम एकता के आश्रय बन गये थे।

इसी मध्य मुसलमानों द्वारा भोले भाले अशिक्षित–हिन्दुओं का लोभवश धर्मान्तरण शुरु हो रहा था, जिसका सबसे अधिक प्रभाव सूदूर ग्रामीण आदिवासी क्षेत्रों में अधिक था। स्वामी श्रद्धानन्द जी की नजर इस ओर गयी और कांग्रेस मंच पर इस समस्या को उन्होंने जोरदार ढंग से उठाया। लेकिन कांग्रेसी नेता इसे अनावश्यक समझ रहे थे और गाँधी जी मुस्लिमों द्वारा धर्म परिवर्तन को व्यक्ति का मौलिक अधिकार कह रहे थे। 1920 के दशक में हिन्दुओं और मुस्लिमों के मध्य गहरी खाई बन गयी। परिणाम स्वरूप भयंकर हिन्दू मुसलिम दंगे हुये, जैसे केरल में मोपला, अमृतसर, सहारनपुर आदि। इस समस्या के समाधान के लिये कांग्रेस ने एक बैठक का आयोजन किया जिस की अध्यक्षता स्वामी जी ने की। स्वामी जी ने साम्प्रदायिक समस्या पर गंभीर और अध्यात्मिक विश्लेषण किया और दंगो का कारण मुसलमानों की साम्प्रदायिक सोच को बताया, लेकिन गाँधी जी ने इससे असहमति जतायी। गांधी जी ने स्वामी जी से कहा कि तुम शुद्धि आन्दोलन बन्द कर दो, इस पर स्वामी जी ने कहा कि मैं इस आन्दोलन को बन्द करने को तैयार हूँ अगर मुस्लिम उलेमा तवलीग के मोलवियों को हटा दें, लेकिन मुस्लिम उलेमा नहीं माने। इसी मध्य स्वामी जी को ख्वाजा हसन निजामी द्वारा लिखी पुस्तक "दाहए इस्लाम" पढ़कर हैरानी हुयी, जिसमें हिन्दुओं को मुस्लिम बनाने की गुप्त योजना थी।

कुँवर सुखलाल जी ने भी कहा था "आर्यों इन दलितों को गले लगालो वरना ये लाल गौरों के हो जायेगे। वास्तव में धर्मान्तरण के परिपेक्ष्य में हिन्दू पीड़ित समुदाय है, उत्पीड़क नहीं। स्वामी जी ने भी कहा था कि हिन्दू (आर्य) सृष्टि के आदि से है अन्य मत बाद में बने। कांग्रेस के काकीनाडा अधिवेशन में अध्यक्षीय भाषण देते हुये, मौ. अली जिन्ना ने कहा था कि हिन्दुस्तान के "छः करोड़ अछूत लावारिस माल हैं इसे आधा आधा हिन्दुओं और मुसलमानों में बाँट देना चाहिये।" लेकिन गाँधी जी ने इसका विरोध नहीं किया। इस घटना ने स्वामी जी को झकझोर दिया और हिन्दुओं की गिरती और मुसलमानों की बढ़ती जनसंख्या का आकलन करके, शुद्धि सभा गठन का निश्चय किया। इस का आधार 1911 की भारत की जनगणना संबंधी रिर्पोट थी जो उन्हें कर्नल मुखर्जी द्वारा उपलब्ध करायी थी। इसका उल्लेख स्वामी जी ने स्वयं लिखित "हिन्दू संगठन" में किया है।

स्वामी जी के आंकलन की भविष्यवाणी आज के परिपेक्ष्य में सही साबित हो रही है। 1951 की जणगणना के अनुसार भारत में हिन्दूओं की जनसंख्या 85% थी जो 2011 में घटकर 79% हो गयी।

कालान्तर में घटित घटनाओं का विश्लेषण करते हुये, दूरदर्शी हिन्दू हिताय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने तत्कालीन शुद्धि सभा प्रधान सर राजा रामपाल सिंह के. ई. सी. से कहा था कि जब मैं अपना शेष जीवन बिछड़े हुये हिन्दुओं की घर–वापसी आन्दोलन में लगाऊँगा। मैं रहू या न रहू शुद्धि कार्य बन्द नहीं होना चाहिये।

स्वामी जी ने हिन्दुओं से हिन्दुओं में उत्पन्न जाति व भेद को समाप्त करने का निर्देश दिया। उन्होंने देश – व्यापी भ्रमण करके पर्वतीय/ सुदूर क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासियों/ पिछड़ों/ दलितों को 'आर्य' उपनाम दिया।

इन्हीं उद्देश्यों की पूर्त्ति के लिये स्वामी श्रद्धानन्द जी ने 13 फरवरी 1923 को उत्तर भारत से आये 85 हिन्दू धर्म के प्रतिनिधियों के समक्ष–आगरा में भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना की थी और सभा के अधिकारियों को नियुक्त किया था।

शुद्धि सभा के आज के संदर्भ में प्रासंगिकता/आवश्यकता जानने के लिये स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा लिखित आत्म कथा "कल्याण मार्ग के पथिक" और हिन्दू संगठन तथा अनन्य विद्वानों द्वारा लिखित मोपला, काला पहाड़, अन्तिम हिन्दू, मुस्लिम विद्वानों की घर वापसी व शुद्धि आन्दोलन संबंधी साहित्य का अवलोकन अवश्य करें।

–चतर सिंह नागर, महामंत्री

प्रेरणा स्त्रोत

1. भरत – खड़ाऊ को सिंघासन पर रखकर राज किया।
2. राम – लंका विजय करके भी लंका में प्रवेश नहीं किया।
3. लक्ष्मण – मुझे केवल सीता के पावों के गहनों की पहचान है।
4. हनुमान – जब संजीवनी बूटी नहीं मिली, तो सारे पहाड़ की बहुत सी औषधियाँ उठा कर ले आये।
5. भीष्म– पिता की दूसरी शादी कराने के लिए स्वयं शादी नहीं की।
6. भामाशाह – महाराणा प्रताप को सेना बनाने के लिए अपना सर्वस्व दे दिया।
7. गुरु गोबिन्द – धर्म के लिए अपने पिता और चार बच्चों का बलिदान स्वीकार किया।
8. गुरु तेग बहादुर – इस्लाम कबूल न किया और अपना बलिदान दे दिया।
9. वीर हकीकत – इस्लाम कबूल न किया और अपना बलिदान दे दिया।
10. शिवाजी – आगरे के किले से निकल कर एक नया उदाहरण स्थापित किया । मुस्लिम महिला को पति के पास पहुचाँ दिया, और कहा काश मेरी माता इतनी सुन्दर होती।
11. वीर सावरकर – अंडमान में कोल्हू का बैल जोता और जहाज़ से समुद्र में छलांग लगाई।
12. बाल गंगाधर तिलक – स्वराज हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।
13. सिकंदर – जीत कर सब कुछ राजा पुरु को दे दिया।
14. अशोक – कालिंग युद्ध के बाद भिक्षु बन बौद्ध धर्म का प्रचार किया।
15. स्वामी दयानन्द – सुराज से स्वराज उत्तम है। पाखंड खंडनी पताका लहराई।
16. स्वामी श्रद्धानन्द – संगीनों के आगे छाती खोल कर चांदनी चौक में आगे बढ़े।
17. महारानी लक्ष्मी बाई– बालक को पीठ पर बांध कर अंग्रेजों से लड़ाई की।
18. पंडित लेखराम – हिन्दुओं को मुसलमान बनने से बचाने के लिए चलती गाड़ी से छलांग लगाई।
19. महाराणा प्रताप– बच्चों को घास की रोटियाँ खिलाई, मगर अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की।
20. गुरु नानक – धनवान का भोजन त्याग भाई लालो की सादी रोटी खाई ।
21. श्री कृष्ण – रणभूमि में गीता का उपदेश दिया।
22. पृथ्वीराज चौहान – शब्द भेदी बाण से मुहम्मद गौरी का सिर उड़ा दिया।
23. नेता जी सुभाष – पठान बन कर जर्मनी पहुचे।
24. सरदार पटेल – बिना लड़ाई के, युक्ति से रियासतों को भारत में मिला दिया।

–हरबंश लाल कोहली

सम्पादकीय

स्वामी श्रद्धानन्द 'एक सकारात्मक सोच'

–आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

युगनिर्माता, वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द एक विलक्षण व्यक्तित्व हैं। स्वदेश, स्वदेशी और गुरुकुल पद्धति के पक्ष पोषक हैं। इनके सामाजिक और राजनैतिक सुधार के कार्य अविस्मरणीय हैं। वैचारिक स्वतन्त्रता समर के रुप में चिरकाल से उपेक्षित गुरुकुल शिक्षा पद्धति का पुनरुद्धार कर ऐसा महान् कार्य किया जो भारतीय इतिहास में अमिट रहेगा। इनका जन्म सन् 1856 में जालन्धर जिले के तलवन ग्राम में नानकचन्द जी के यहाँ हुआ था। सम्पन्न परिवार से होने के कारण इनकी शिक्षा–दीक्षा इलाहाबाद के म्योर सेन्टल कालेज में हुई। फलतः मुंशीराम जी की रुचि भौतिकवादी थी। काशी और प्रयाग में हिन्दू धर्म की जिन विकृतियों से उनका परिचय हुआ उससे उनके धार्मिक वैचारिक पक्ष अत्यन्त दुर्बल हो गया था। किन्तु बरेली में जब उनका सम्पर्क स्वामी दयानन्द सरस्वती के साथ हुआ तब उनके मन से पूर्णतया भौतिकवादी व पाश्चात्य विचार धारणायें परिवर्तित हो गयीं। स्वामी दयानन्द के उपदेशों का उन पर जो प्रभाव पड़ा उससे जीवन की दिशा ही बदल गयी। महर्षि दयानन्द के कार्य को पूर्ण करने हेतु अपना बलिदान दे कर "वयं तुभ्यं बलिहृत स्याम" वेद मन्त्रों के व्यवहारिक पक्ष को अपने जीवन में उतारा। उनके कार्य, निष्ठा व दक्षता उनको एक सोच के रुप में प्रस्तुत करती है जो सदैव आर्य जनों को प्रेरणा देती रहती है। ध्यातव्य है कि सम्प्रतिकाल में स्वामी श्रद्धानन्द एक व्यक्ति विशेष न होकर एक सकारात्मक सोच हैं, एक शक्ति पुंज है जो महर्षि दयानन्द के कार्यों को करने के लिए प्रेरित करती रहती है। स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि अभियान चला कर जीवन प्रद और कर्तव्यसूचक तथा गौरवपूर्ण 'हिन्दूत्व' का प्रचार किया। अन्य शब्दों में वही व्यक्ति हिन्दू है जो हिमगिरि के धवल शैल–श्रृगों से महोदधि की उत्ताल तरंगो तक विस्तृत इस भू खण्ड को अपनी पितृभूमि के रुप में मान्यता देता है, जो रक्त सम्बन्ध की दृष्टि से उसी महान जाति का वंशज है, जिसका प्रथम उद्भव वैदिक सात सिन्धवों में हुआ था और जो निरन्तर अग्रगामी होती अन्तर्भूत को पचाती तथा महनीय रुप प्रदान करती हुई हिन्दू जाति के नाम से सुख्यात हुई।

उपरोक्त परिभाषा को और भी अधिक संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

आ सिन्धु सिन्धु पर्यता यस्य भारत भूमिका पितृभूः पुण्यभूश्चैव सर्वे हिन्दू रितिस्मृतः।

स्वामी जी के कर्म–तथा वचन में उपरोक्त संज्ञा का क्रियात्मक रूप देखने को मिलता था। हिन्दुत्व के लिए स्वामी जी द्वारा दिया गया वृहद् प्रयास तभी फलित होगा जब सब सुधी आर्य जन इस दिशा में यथा शक्ति प्रयत्न करेंगे।

सम्पूर्ण देश! स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस की इस घड़ी में उनके अनुयायी ऋषि के व आर्यसमाज के अधूरे कार्य को गति पूर्वक आगे बढायें यही उनके प्रति पुनश्च सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

ब्रिटिश सरकार को कंपा दिया
स्वामी तेरी हुंकार ने।
संगीनो को झुकवा दिया
स्वामी तेरी ललकार ने।।
चांदनी चौक साक्षी है
स्वामी तेरे शौर्य का।
इक नया इतिहास रचा दिया
स्वामी तेरे विचार ने।।

ऋषियों ने भी किए शुद्धि कार्य

स्वामी श्रद्धानन्द ने सन् 1919 में राजनीति में पदार्पण किया। दिनांक 6.9. 1919 को कांग्रेस के मंच से दिल्ली में पहला व्याख्यान दिया। स्वामी जी ने शुद्धि के क्षेत्र में बहुत बड़ा कार्य किया तथा अछूतों के लिए भी कार्य कर उन्हें सम्मान देने का प्रयत्न किया यही नहीं उन्होंने दिल्ली में हड़ताल होने पर जुलूस में अगुआई का कार्य किया जुलूस को बेधड़क हो अंग्रेज सेना की संगीनों को धिक्कारते देते हुए चांदनी चौक घण्टाघर से आगे ले गए थे। यही नहीं उनका पूरा जीवन ही राष्ट्र के लिए समर्पित रहा।

सन् 1923 में आगरा में हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना हुई। स्वामी श्रद्धानन्द जी इस सभा के प्रधान चुने गए इसके साथ ही शुद्धि के काम में तेजी आ गई। दिल्ली में अखिल भारतीय हिन्दू सभा की स्थापना की गई अनेक मुसलमान हिन्दू धर्म में आने लगे। स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि का कार्य और भी तेज कर दिया उन्होंने तीन पत्र निकालने आरम्भ कर दिए। यह थे 'अर्जुन' जो हिन्दी में निकलता था, दूसरा 'तेज' जो उर्दू में था, अंग्रेजी भाषा में भी 'लिवरेटर' नामक पत्र निकाला इनमें शुद्धि का खूब प्रचार किया जाता था।

स्वामी श्रद्धानन्द ने ऋषि दयानन्द के कार्य को आगे बढ़ाया। इसके साथ ही अनेक आर्य क्रान्तिकारियों ने भी शुद्धि कार्य को आगे बढ़ाया जिसमें पं. लेखराम जैसे महान क्रान्तिकारी भी शहीद हो गये। यह शुद्धि का कार्य कोई नया नहीं अपितु इससे पूर्व भी विदेशी व विधर्मियों को शुद्ध कर आर्य धर्म में सम्मिलित किया गया। यह कार्य मान्धाता, इन्द्र, देवल ऋषि द्वारा भी किए जाते रहे। याज्ञवल्क्य स्मृति की मिताक्षरा टीका में भी शुद्धि का वर्णन है आचार्य विद्यारण्य द्वारा पंचदशी में भी शुद्धि कार्य का वर्णन दिया गया है। यह कार्य महाभारत काल में भी हुआ उस समय यवन शक तुषार आदि को आर्य धर्म में लाने हेतु राज शक्ति का भी प्रयोग किया गया तथा हूण, आँध्र, पुलिन्द, पुक्कस, आमीर, कंक पवन, खस आदि हीन व विधर्मी जातियां आर्य संस्कृति के सम्पर्क में आने से आर्य धर्मी हो गई। प्राचीन काल में विधर्मियों को आर्य बनाने के लिए सूत्र ग्रन्थों में 'व्रात्यस्तोम' यज्ञ का विधान भी किया गया ताण्ड्य ब्राह्मण के सत्तरहवें अध्याय में भी शुद्धि संस्कार का वर्णन दिया है। शिवाजी ने भी एक ब्राह्मण जो उनकी मंत्री परिषद् में था को मुसलमान बनने के बाद पुनः आर्य धर्म में वापिस लेकर ब्राह्मणों में सम्मिलित करा लिया था।

कहने का तात्पर्य यह है कि जब हम किसी विधर्मी को आर्य धर्मी बना लेते हैं तो हिन्दु परिवार उसे तिरछी आंखों से देखने लगते हैं और समाज में उस विधर्मी परिवार स्त्री व पुरुष को बड़ी हेय की दृष्टि से देखते व अनेक, विरोधी बातें करने लगते हैं। यह हमारी छोटी मानसिकता व सोच है। प्राचीन समय से पता नहीं कितने स्त्री पुरुष जो देवल ऋषि महाभारत, व्रात्यस्तोम द्वारा एवं अन्य ऋषिओं द्वारा आर्य धर्म में लाए गए आज हम जब उन हिन्दु (आर्यों) को अपना अभिन्न अंग मानते हैं वह या हम एक हिन्दू, (आर्य) समाज के ही अंग हैं, ऋषि दयानन्द के अनुसार आर्य विचार ग्रहण करने पर ही विधर्मी आर्य हो जाते हैं उनके गुण कर्म स्वभाव आर्यों जैसे हो जाने चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द ने भी यही कार्य किया हमें उनके द्वारा स्थापित आर्य समाजों व भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के शुद्धि सम्बन्धी कार्यों को तीव्र गति से करते रहना चाहिए क्योंकि हम चाहते हैं कि संसार का उपकार हो सब शान्ति से रहें सबके मन विचार एक से हों। इसके लिए शुद्धि ही सर्वोत्तम उपाय है यही अस्त्र है यही शस्त्र है मानवता का सुन्दर मार्ग है। जो परिवार शुद्ध होकर आर्य धर्म में आ जाते हैं उनसे अपनों जैसा ही व्यवहार करना चाहिए ताकि उन्हें यह अनुभव न हो कि हम पहले क्या थे। आर्य धर्म ही हमारा अपना धर्म है।

–डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह (खुर्जा)
–प्रचारक शुद्धि सभा दिल्ली

नारी के सच्चे आभूषण

प्रत्येक नारी को पढ़ा–लिखा सुशिक्षित होना परम आवश्यक है। पढ़ने लिखने के बाद महिला को मूर्खता के काम नहीं करने चाहिये। सोने चाँदी के आभूषण लादकर कोई नारी समाज में सम्मान प्राप्त करने योग्य नहीं होती, जब तक उसमें निम्नलिखित गुण नहीं हैं :–

1. **लज्जा** – यह नारी का सबसे पहला गुण है। जो महिला लज्जाहीन (बेशर्म) है वह नजरों से गिर जाती है। कोई स्त्री बेशक काली है परन्तु लज्जा की सीमा में रहती है तो सबको अच्छी लगती है।

2. **मीठी वाणी** – यह दूसरा गुण है। जो नारी नम्रतापूर्वक मीठा बोलती है, उसकी सब प्रशंसा करते हैं। जो महिला कर्कश (कड़वे) शब्दों का प्रयोग करती है वह किसी को अच्छी नहीं लगती, उससे कोई बात करना पसन्द नहीं करता।

3. **आचरण** – कोई नारी लज्जावती है और वाणी भी मधुर है परन्तु आचरण शुद्ध नहीं। जैसे मीठा तो बोलती है परन्तु असत्य (झूठ) बोलती है या हेराफेरी करती है तब उसका विश्वास कोई नहीं करता अपितु निन्दा करते हैं। अतः तीसरा गुण सत्य आचरण है।

4. **कुशल गृहिणी** – नारी में सब गुण होते हुये भी यदि गृहकार्य में दक्ष नहीं है तो अनेक प्रकार के कष्ट होते हैं। जैसे भोजन बनने की कला में प्रवीण नहीं है तो परिवार में सम्मान नहीं होता। ऐसे ही घर में सामान को ठीक ढंग से उचित जगह पर रखना और सफाई का ध्यान रखना गृहिणी की विशेषता है। सिलाई कढ़ाई भी गृहकार्य में आवश्यक है।

5. **व्यावहारिक ज्ञान** – किसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये, इसमें भी नारी को कुशल होना चाहिये। जैसे अपनी गुरुजनों (बड़ों) वा सम्बन्धियों की सेवा–सत्कार में कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये।

नारी के यह गुण ही उसके सच्चे आभूषण हैं। जो नारी अपने पिता और पति के कुल की शोभा बनाकर रखना चाहती है, इन गुणों को धारण करना चाहिये। उर्दू में कवि ने लिखा है :–

नहीं मोहताज जेवर की, जिसे खूबी खुदा ने दी।
कितना खुशनुमा लगता है, देखो चाँद बिन गहने।।

– देवराज आर्य मित्र, नई दिल्ली

भारत रत्न पं. मदन मोहन मालवीय

न त्वम् कामये राज्यम्,
न स्वर्ग न पुनर्भवम्
कामये दुःख तप्तानाम्
प्राणिनाम् आर्तिनाशनम्।

अर्थः – न कामना मेरी राज्य, न स्वर्ग, न भवनों की प्राप्ति हो, कामना केवल यही कि पीड़ितों के दुख व कष्टों की समाप्ति हो।

आजीवन जिस राष्ट्र पुरुष और महान विभूति के हृदय में यह ज्योति निरन्तर जलती रही, जिसके श्वास-श्वास की सम्पूर्ण श्रृंखला में मानव और राष्ट्रहित की कामना बनी रही और जिसका सम्पूर्ण जीवन सर्व के हितार्थ और उत्थान में समर्पित रहा वो महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी भारत रत्न से सम्मानित विलक्षण प्रतिभा के धनी और समर्पण के प्रतीक व जननायक थे।

पं. मदन मोहन मालवीय जी का जन्म 25 दिसम्बर 1861 ई. को संगम नगरी इलाहबाद में हुआ। उनकी माताश्री भूनादेवी तथा पिताश्री पं. वज्रनाथ थे। इनके पूर्वज मध्यप्रदेश के मालवा प्रान्त के थे, जो इलाहाबाद आकर बस गए। इसलिए ये मालवीय के नाम से जाने गए। यद्यपि पण्डित मदन मोहन जी का जन्म इलाहाबाद में हुआ परन्तु अपनी कर्म और तपस्थली इन्होंने काशी (बनारस) को ही बनाया। वहीं आपकी अथक साधना और परिश्रम से, पूर्ण लगन और समर्पण भाव से काशी हिन्दू विश्व विद्यालय की स्थापना का पुण्य कार्य 1916 ई. में पूरा किया जिसके संकल्प को 1904 ई. से पूरा करने के लिए अपनी चली चलाई वकालत को किनारे रख दिया।

उस अन्धेरे युग में आवश्यकता थी ज्ञान के प्रकाश की,

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की रचना गाथा बनी विश्व के इतिहास की।

बहुत कम लोग इस बात से अवगत होंगे कि ब्रिटिश सरकार अपना विशिष्ट नागरिक सम्मान "सर" की उपाधि से उन्हें सम्मानित करना चाहती थी, जिसे भारत सपूत और राष्ट्रीयता के प्रखर नायक पं. मदन मोहन मालवीय जी ने अस्वीकार कर दिया। पूछने पर उन्होंने लोगों से इतना ही कहा मेरे पास पण्डित की उपाधि पहले ही विद्यमान है जो "सर" की उपाधि से कहीं ऊंची है। वह दौर ब्रिटिश सरकार के प्रति जनमानस से आतंकित व पीड़ित और आक्रोश का था। यह अस्वीकृति उनकी प्रखर राष्ट्र भक्ति की भावना को प्रमाणित करती है।

पण्डित मदन मोहन मालवीय जी स्वाधीनता संग्राम के अग्रणी पंक्ति के नायकों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। वे देश भक्त, राजनेता, सुधारक, शिक्षाविद्, शिक्षक, सम्पादक और उत्कृष्ट श्रेणी के वक्ता और ऊंचे स्तर के अधिवक्ता थे जो किसी भी कीमत पर झूठे मुकदमें की पैरवी करने के लिए तैयार नहीं हुए। वे सच्चे भारतीय और संस्कृति के नायक थे। अपनी वकालत को यद्यपि हिन्दू विश्वविद्यालय के निर्माण के कारण छोड़ चुके थे। परन्तु देश की पुकार पर वह दो दशकों के अन्तराल के बाद पुनः वकालत के क्षेत्र में उतरे, जब गोरखपुर में 1920 के समय गांधी जी के आह्वान पर असहयोग आन्दोलन आरम्भ हुआ। चौरा चौरी का भीषण हिंसककाण्ड, आगजनी आदि की घटनाओं का कारण बना। बहुत बड़ी जन-धन की हानि हुई। ब्रिटिश सरकार ने मुकदमा चलाया और 170 लोगों को फांसी की सजा सुनाई गई। पण्डित जी भारतीयों के पक्षधर बनकर वकील के रूप में मुकदमा लड़ने के लिए प्रस्तुत हुए और अपनी कुशाग्र और तार्किक प्रतिभा के आधार पर 151 व्यक्तियों को फांसी के फन्दे से बचा लिया। बड़े-बड़े अंग्रेज, वकील और जज उनकी प्रतिभा के दीवाने हो गए। इस महत् कार्य के लिए सभी और उनका स्वागत और सम्मान हुआ।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का निर्माण का कार्य अत्यन्त चुनौती पूर्ण और कठिन था। यद्यपि 1902 ई. में स्वामी श्रद्धानन्द ने गंगा के तट पर हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना अपनी सारी ऊर्जा और शक्ति लगाकर स्थापना की थी, जिसमें प्राचीन गुरुकुल पद्धति को शिक्षण के लिए अपनाया गया था। लेकिन पण्डित जी ने आधुनिक शिक्षा को वक्त के अनुकूल समझकर इसमे चिकित्सा, इन्जीनियरिंग के साथ ज्ञान विज्ञान के कई संकाय स्थापित किए। आज इसमें लगभग 30 हजार विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते हैं और यह विश्व की एक अनूठी शिक्षण स्थली और विश्व का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय है। इसके निर्माण के लिए पं. मदन मोहन मालवीय जी ने जनता और राजाओं-नवाबों के आगे अपनी झोली फैलाई उन्होंने जनता से पाई, धैले, पैसे, आना, चव्वनी... रूपये आदि इक्कठे किये और शिक्षा के इस पुनीत कार्य को सम्पन्न किया।

काशी हिन्दु विश्वविद्यालय के निर्माण के लिए जब वो दान लेने के लिए भिन्न भिन्न लोगों के द्वार पर पंहुचे, तब किसी ने सत्कार किया और किसी ने दुत्कार दिया। किसी ने सम्मान के फूल भेंट किये, तो किसी नवाब ने उनसे कहा कि दान के नाम पर मेरे जूते ही ले लीजिए। पण्डित जी ने बड़ी विनम्रता से उनके जूतों को उठाया और उन जूतों को उनकी जनता के बीच नीलाम किया। उसकी रसीद बनाकर नवाब को भेज दी। शर्मिन्दा होकर नवाब साहब को अपनी गल्ती का एहसास हुआ और फिर उन्होंने खुले दिल से इस विद्या के मन्दिर के लिए अपना सहयोग दिया। हैदराबाद के निजाम साहब ने भी प्रारम्भ में प्रतिकूल व्यवहार किया था। लेकिन बाद में उन्होंने भी भूल को सुधारते हुए जन हित के इस कार्य में योगदान किया।

सौभाग्यवश पं. मदन मोहन मालवीय जी के विलक्षण कुशल नेतृत्व और उदार हृदय के कारण काशी विश्वविद्यालय के गौरव को बढ़ाने में श्री सुन्दरलाल, डा. राधाकृष्णन (भूतपूर्व राष्ट्रपति), डा. अमरनाथ झा, आचार्य नरेन्द्र देव, डा. रामा स्वामी अय्यर, डा. त्रिगुणसेन (भूतपूर्व केन्द्रीय शिक्षामंत्री) और स्वंय पंडित जी के कुलपति पद पर रहकर इसकी गरिमा और गौरव को बहुत शिखर तक पंहुचाया। आज काशी हिन्दू विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में बहुत अग्रणी और विशिष्ट है। अविभाजित भारत की सीमाएँ 1947 ई. से पूर्व बहुत बड़ी थीं। हिन्द केसरी गामा, जब बड़े बड़े विशालकाय पहलवानों को पराजित करके हिन्द केसरी बने तब उन्हें इस विश्वविद्यालय में आमन्त्रित किया गया। गामा ख्याति के शिखर पर थे। वे बनारस आए। रथ पर बैठकर हाथों में चान्दी की गदा उठाए हुए, जब वो बनारस की गलियों में से गुजरे, तब उनके पीछे चहूँ ओर जयघोष गुजाएंमान था। गुलाब और गेंदे की बौछार जो गामा पर की गई थीं उनसे बनारस की सड़कें भरी हुईं थी। गामा विश्वविद्यालय के प्रांगण में पंहुचे। विशाल जनसमूह बारबार हिन्द केसरी गामा के नारे लगा रहा था। आखिर वो समय आ ही गया जिसकी प्रतीक्षा थी। युवा, विद्यार्थी, शिक्षक, बड़े अधिकारी सब बड़े कौतूहल से गामा के उद्बोधन को सुनना चाहते थे। गामा से निवेदन किया गया कि वह अपना उद्बोधन नवयुवकों की प्रेरणा हेतु दें। गामा ने युवकों के विशाल जनसमूह की ओर इंगित करते हुए कहा... "मेरे प्यारे नौजवान साथियों व दोस्तों! मेरी आप सबसे एक अर्ज़ है आप सबको एक सलाह है... आप कभी भी गामा बनने का न तो कोई ख्वाब देखें और ना हीं कोई इरादा पालें। क्योंकि मेरे मन में, मेरे ख्यालों में, हमेशा बड़ी से बड़ी हस्ती को उठाकर उसे जमीन पर पटककर, उसकी आन-बान-शान को धूल में, मिट्टी में मिलाने की रही है, और रहती है। इसलिए मेरी आपसे यही गुजारिश है, यही ख्वाहिश है कि अगर बनना है तो आप उनकी (पं. मदन मोहन मालवीय जी की ओर संकेत करते हुए) तरह बनें। क्योंकि वो धूल में पड़े हुए, जमीन पर गिरे हुए इन्सानों को ऊंचा उठाने की कोशिश में लगे हुए हैं, नेक काम कर रहे हैं। पूरी दुनिया की इन्सानियत को इन पर नाज है।" गामा ने वहाँ पं. पदन मोहन मालवीय जी के नाम का जय घोष लगाया तो समूचा प्रांगण पण्डित जी के जयघोष के लगाए गए नारों से गूंज उठा।

पं. मदन मोहन मालवीय जी कांग्रेस के दो बार अध्यक्ष रहे। सन् 1886 में कांग्रेस के कलकता अधिवेशन में मात्र 25 वर्ष की आयु में वे अपने गुरु आदित्य राम भट्टाचार्य के साथ उन्होंने भाग लिया। पण्डित जी ने जो मंच से वयक्तव्य दिया, उसे सुनकर सर ए.ओ. हयूम बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने उन्हें देश का भावी नेता कहा। पण्डित जी समर्पित समाज सुधारक और कुशल नेता थे। उन्होंन दलितों को विश्वनाथ के मन्दिर में प्रवेश के लिए नेतृत्व प्रदान किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ मिलकर 1923 में भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना की और हिन्दु समाज को विघटन से बचाया और उन लोगों के लिए अपने धर्म में पुनः लौटने का मार्ग प्रशस्त किया जो अपने पूर्व धर्म में लौटने के लिए उत्सुक थे। यद्यपि मालवीय जी से महात्मा गांधी बहुत प्रभावित थे। परन्तु फिर भी तत्कालीन समय में बहुत सी ऐसी स्थितियाँ पनपती रहीं जिससे उनका कांग्रेस से मोह भंग हो गया और उन्होंने हिन्दु महासभा की स्थापना में अपना योगदान दिया।

पं. मदन मोहन मालवीय जी ने पत्रकारिता के क्षेत्र में अद्भुत योगदान दिया। वह बहुत ऊंचे सिद्धान्तों के पक्षधर और पत्रकारिता की स्वतन्त्रता और मूल्यों के समर्थक थे। उन्होंने हिन्दोस्थान नामक साप्ताहिक पत्रिका को दैनिक लोकप्रिय समाचार पत्र बना दिया। पण्डित जी ने इस पत्र के मालिक राजा रामपाल सिंह को पहले ही अवगत कर रखा था कि वे शराब पीकर नशे में कभी उनके सामने कार्यालय में न आएँ। लेकिन एक दिन राजा रामपाल शराब पीकर पण्डित जी के समक्ष कार्यालय में आ गए तो पण्डित जी ने उसी समय अपना त्यागपत्र देकर सम्पादक के पद को छोड़ दिया। बाद में उन्होंने इण्डियन ओपिनियन, लीडर मर्यादा, सनातन धर्म और अभ्युदय का सम्पादन किया और इन समस्त पत्र पत्रिकाओं को ऊंचे शिखर प्रदान किए। वे श्रीमद्भागवत तथा गीता के विख्यात् व्याख्याकार थे।

पं. मदन मोहन मालवीय जी को किसी भी राजनैतिक दल के साथ नत्थी नहीं किया जा सकता। वह विराट व्यक्तित्व के स्वामी थे। वे उदारमना, समूची मानवता के प्रति समर्पित विलक्षण गुणों से सम्पन्न थे। सन् 1946 में पण्डित जी का निधन हो गया। वे स्वतन्त्र भारत के गगन की प्रातः के दर्शन न कर सके। यह कितना अच्छा संयोग है कि भारत सरकार ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा पं. मदन मोहन मालवीय जी को अपनी अपनी विशेषताओं और राष्ट्र के उत्थान के लिए उनके योगदान के अनुरूप भारत रत्न का सम्मान प्रदान किया। साधुवाद!

चांद और सूरज ही रूप संवारे
इस विशाल गगन का,
मन की पीड़ा पहचान आंसू पोंछ,
पीड़ित के नयन का।
त्याग भाव समर्पण से रूप संवारा
जिन्होंने अपने वतन का,
बधाई, वाजपेई जी, मालवीय जी को
सम्मान मिला भारत रत्न का।

-लेखक विजय गुप्त (साहित्यकार)
– एफ-1/335, मदनगीर, नई दिल्ली

हिन्दुओं की पुरातन सोच

हिन्दुओं में कुछ कमियां और कमजोरियां हैं जिनके कारण वे भारत में 80 प्रतिशत होते हुए भी प्रभावहीन हैं। प्रस्तुत लेख में उन कमियों पर विचार किया है ताकि हिन्दु जाति उन पर चिन्तन करके अपनी कमजोरियों को दूर करके उन्नत हो तथा देश और विश्व में प्रभावशाली भूमिका निभा सके।

1. धर्मगुरुओं के भ्रमित उपदेश : हिन्दुओं के धर्मगुरु उन्हें वीर, बहादुर, पराक्रमी, स्वाभिमानी, देशभक्त तथा परोपकारी बनने का उपदेश नहीं देते। वे उन्हें अपने बल, बुद्धि का प्रयोग करना भी नहीं सिखाते, वे उन्हें अन्धविश्वासी बनाकर गुरु पर आश्रित रहना सिखाते हैं। उन्हें शुभ कर्म करने की शिक्षा देने के बजाए, अच्छे-बुरे सब प्रकार के कर्म गुरु को अर्पण करने का उपदेश देते हैं। इस प्रकार हिन्दु मानसिक और बौद्धिक रूप से कमजोर और कायर बनकर गुरु के सहारे बैठ जाते हैं और उसे दक्षिणा रूप में धन देते रहते हैं।

2. ईश्वर की सत्यविरोधी अवधारणा : ईश्वर निराकार, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्व अन्तर्यामी है। वह सारी सृष्टि को बनाने वाला है। वह हमारे सब अच्छे, बुरे कार्यों को देखता और जानता है तथा उनके अनुसार हमें सुख और दुख के रूप में फल देता है। ईश्वर के इस सत्य स्वरूप को न मानकर मिट्टी के खिलौनों को ईश्वर मान लेना, उनके आगे हाथ जोड़ देना, सिर झुका देना कोरी अज्ञानता के सिवाए और क्या है।

3. कर्म व्यवस्था को स्वीकार न करना: जैसा बुरा कर्म मनुष्य करता है वैसा की फल उसे ईश्वर की व्यवस्था से मिलता है। ईश्वर पूर्ण न्यायकारी है, वह कोई सिफारिश नहीं मानता, रिश्वत नहीं लेता। अच्छे और बुरे कर्मों के फल भोगकर ही समाप्त होते हैं। उनसे बचने का कोई भी उपाय नहीं। फिर भी हिन्दु जाति कोई विपत्ति आने पर उसका कारण ग्रहों-नक्षत्रों को मानती है और इधर-उधर ढोंगियों से उपाय करवाती फिरती है। ज्योतिषी के नाम पर ये ढोंगी लोग ऐसे मानसिक रूप से कमजोर लोगों को झूठे आश्वासन देकर उनका धन लूटते हैं।

4. धर्म की अनुचित अवधारणा : मन, वचन, कर्म से सत्य का आचरण, पक्षपात रहित न्याय, परोपकार, सदाचार आदि ही धर्म है। पत्थर की मूर्ति पर दूध डालना और पेट भरे पण्डित को खिलाना, जनेऊ पहनाना, चोटी रखना आदि कर्म धर्म नहीं है। धर्म का सम्बन्ध शुद्ध आचरण से है, दिखावे और आडम्बर से नहीं।

5. पाषण पूजा को ईश्वर पूजा माननाः पाषाण पूजा ईश्वर की पूजा नहीं है। ईश्वर की पूजा तो हो ही नहीं सकती। उसे हमारी पूजा की जरुरत भी नहीं। वह कभी प्रसन्न या अप्रसन्न नहीं होता। वह तो सदा आनन्द स्वरूप है। मूर्तिपूजा व्यर्थ है। इसने आज तक हिन्दुओं को दिया ही क्या है? मूर्तिपूजा के कारण हिन्दु जड़बुद्धि, विवेकहीन और शुभ कर्म विहीन हो गए हैं। हजारों मन्दिरों और मूर्तियों को मुसलमान हमलावरों और शासकों ने तोड़ा और लूटा है। कोई एक मूर्ति किसी आक्रमणकारी की एक टांग भी न तोड़ सकी। अनेक लड़ाइयां हिन्दुओं ने मूर्ति में शक्ति के झूठे विश्वास के कारण मुसलमानों से हारी हैं जिनके परिणामस्वरूप हिन्दुओं को भयानक रक्तपात, लूटपाट और दासता झेलनी पड़ी है।

6. प्रक्षिप्त साहित्य : हिन्दुओं ने अपने असली और सही ग्रन्थ चार वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद को तो भुला दिया है गप्पों से भरे अठारह पुराणों को अपना लिया है। पुराणों के अन्दर ज्यादातर बातें झूठी, असम्भव, अनैतिक और अश्लील हैं हिन्दु बेशक इन पुराणों को पढ़ते तो बहुत कम हैं पर पण्डित लोग इन्हीं पुराणों के आधार पर कथा-वार्ता और उपदेश करते हैं। हिन्दु ऐसे उपदेशों को ही सुनते हैं, उन पर विश्वास करते हैं। ऐसे उपदेशकों को विद्वान् और पुराणों को ही असली धर्म ग्रन्थ मानते हैं। जैसा साहित्य वैसी बुद्धि। इसलिए हिन्दुओं की बुद्धि तार्किक नहीं है। हिन्दु साहित्य की दूसरी बड़ी समस्या है कि रामायण, महाभारत आदि इतिहास ग्रन्थों में बड़ी भारी मिलावट है जैसे गंगा गंगोत्री से चली तो पूरी तरह स्वच्छ और पवित्र है परन्तु आगे आकर गन्दगी मिलने से दूषित हो गई है। पर हिन्दु इस तथ्य को स्वीकार नहीं करते, करते भी तो नीर-क्षीर करने की जरुरत नहीं समझते। इसलिए हिन्दु अविद्या-अन्धकार में फंसे रहते हैं।

7. झूठी आस्था – हिन्दुओं में तार्किक बुद्धि और वैज्ञानिक सोच का अभाव है। आस्था के नाम पर वे बुद्धि को ताक पर रखकर हर गलत बात को सही और असम्भव को सम्भव मान लेते हैं। झूठ मनुष्य को उन्नति की ओर नहीं ले जा सकता, वह तो अवनति की ओर ही ले जाता है। रेत को खांड़ मानने से वह खांड़ नहीं बन जाता। आस्था सत्य पर ही आधारित होनी चाहिए, झूठ पर नहीं। इसीलिए हिन्दू भ्रमजाल में फंसे रहते हैं।

8. मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा : वेद ने ईश्वर को शरीर रहित (अकायम्), अजर, अमर, अजन्मा, नित्य और पवित्र बताया है। परन्तु हिन्दुओं ने अपनी कल्पना से अलग-अलग तरह के भगवान बना लिए हैं। ईश्वर का विषय मन और आत्मा से सम्बन्धित है परन्तु मूर्तिपूजकों ने इसे आँख का विषय बना लिया है। पण्डितों द्वारा मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा का ढोंग भी हिन्दुओं को समझ में नहीं आता। साधारण बुद्धि वाला व्यक्ति भी जानता है कि पत्थर की मूर्ति में न तो देखने-सुनने की शक्ति है, न उसमें कुछ समझने या करने की शक्ति है, न ही उसमें प्राण पड़ सकते हैं। पुजारी तो धन ऐंठने के लिए हिन्दुओं को बेवकूफ बनाते हैं। पर हिन्दू क्यों मूर्ख बनते हैं? यह बात समझ से परे है।

9. गरीबों के प्रति सहानुभूति की कमी – हिन्दुओं में दान देने की प्रवृत्ति तो है, पर देते गलत जगह पर हैं। वे निठल्ले और पेट भरे पण्डितों को दान देते हैं जो महापाप है। दान तो जरुरतमन्द को और विद्या के प्रसार के लिए देना चाहिए। बेरोजगारों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने चाहिए, कल-कारखाने लगाने चाहिए। ईश्वर के नाम पर मन्दिर में देना अपने आपको धोखा देना है क्योंकि ईश्वर देता है, लेता नहीं।

10. जातपात - जन्म की जातपात ने हिन्दू समाज को बांट दिया है, बेहद खोखला और कमजोर किया है। जातपात की बात पूरी तरह समाप्त होनी चाहिए। सभी की एक जाति-मनुष्य जाति-समझी जाए।

11. इतिहास को भुला दिया- इतिहास से सीख लेकर किसी भी समाज को आगे की रणनीति बनानी चाहिए। अगर आप इतिहास से सबक नहीं सीखते तो आपके साथ फिर वही कुछ होगा जो पहले हो चुका है। मुसलमानों ने हिन्दुओं पर आठवीं सदी से लेकर अठारहवीं सदी तक अथाह अत्याचार किए हैं। उन्होंने हज़ारों मन्दिरों और मूर्तियों को तोड़ा। वहां से सोना, चाँदी, को लूटा और लगभग सवा तीन लाख हिन्दुओं को कश्मीर छोड़ने पर मजबूर कर दिया। पर हिन्दुओं ने इन सब घटनाओं से कोई सबक नहीं सीखा। हिन्दू अपने मित्र और शत्रु में अन्तर नहीं कर पाते। जो उन्हें समझाता है उसे वे अपना शत्रु मानते हैं और जो उन्हें बहकाता है उसे वे अपना मित्र मानते हैं। यह बहुत ही दुख का विषय है।

12. हिन्दुओं में नेतृत्व और संगठन का अभाव - हिन्दुओं का कोई तगड़ा नेता नहीं है जो सारी हिन्दू जाति को संगठित और सशक्त बना सके।

13. कब्र पूजा - हिन्दू मुसलमानों की कब्रों से खैर मांगते फिरते हैं, ये वे कब्रें हैं जिनमें हिन्दुओं पर अत्याचार करने वाले मुसलमानों को कभी दबाया गया था। यह मूर्खता की पराकाष्ठा है, हिन्दु वीरों का अपमान है और अपनी जाति से गद्दारी है। यहां कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं ....

..

अजमेर की दरगाह शरीफ में सूफी सन्त मुइनुद्दीन चिश्ती की कब्र है। ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती (गरीब नवाज) का जन्म 1141 में अफगानिस्तान में हुआ था। वह मुहम्मद गौरी के साथ भारत आया था। उसने भारत आकर 700 हिन्दुओं को मुसलमान बनाया था। अजमेर में जिस स्थान पर दरगाह है वहां पर पृथ्वीराज चौहान का राज्य था। मुहम्मद गौरी पृथ्वीराज चौहान को पकड़कर उसकी आँखें निकालकर उसे बन्दी बनाकर अपने साथ अफगानिस्तान ले गया था।

बहराइच (उत्तर प्रदेश) के पास मसूद गजनी की मजार है। मसूद गजनी, सोमनाथ मन्दिर पर हमला करने वाले महमूद गजनवी का बेटा था। उसने 1033 में बड़ी सेना के साथ भारत पर आक्रमण किया था। जून 1033 में बहराइच के मैदान में मसूद गजनी की और भारत के हिन्दु राजाओं की हुई लड़ाई में मसूद मियां की सेना की हार हुई तथा वह स्वयं भी मारा गया। मुसलमानों ने उसे वहीं दबा दिया तथा उसे गाज़ी की पदवी दे दी। मुसलमानों में गाज़ी की पदवी सबसे बड़ी पदवी मानी जाती है। यह पदवी उसे दी जाती है जिसने गैर-मुसलमानों का कत्लेआम किया हो। वहां पर मुसलमान हर वर्ष इकट्ठे होते हैं और त्यौहार मनाते हैं। दुख और आश्चर्य की बात है कि हिन्दु उन हिन्दु वीरों को तो भूल गए जिन्होंने अपनी जाने देकर मसूद मियां को मारा तथा उसी सेना को हराया था। उलटा इस मसूद मियां की कब्र पर मन्नतें मांगने जाते हैं और टी.वी. चैनल इसे धार्मिक सद्भावना एवं धर्मनिरपेक्षता का जीता जागता प्रमाण बताते हैं।

– कृष्ण चन्द्र गर्ग

हिन्दुओं के बाहुल्य पर धर्म संकट

भारत कभी विश्वगुरु कहलाता था। भारत ने विश्व को सबसे सही कालगणना दी। भारत ने विश्व को गणित दिया। भारत ने विश्व को आयुर्वेद दिया, धातुशास्त्र दिया, संगीत दिया, सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा संस्कृत दी, वैमानिकी की कल्पना दी, युद्ध के लिए श्रेष्ठ अस्त्र-शस्त्रों की कल्पना दी, योग दिया, विज्ञान सम्मत जीवन जीने की विधि दी, शून्य और अनंत की अवधारणा दी – भारत ने ही विश्व को एक अप्रतिम अवधारणा दी– गणतंत्र की, समन्वय की, सह अस्तित्व की, हमें अपने देश पर, मानवता को अपने योगदान पर, गर्व है।

किन्तु हम ध्यान दें तो पाएँगे कि भारत का विश्व को सारा योगदान तब का है जब भारत में हिन्दुत्व प्रबल था, भारत पर अब से अन्य संस्कृति का दखल हुआ, चाहे वह यूनानी हो, इस्लामी हो या ईसाइयत हो, भारत का विश्व में योगदान अत्यंत कम हो गया, वास्तव में इसके पीछे हिंदुत्व के कुछ गुण हैं, इन गुणों की चर्चा हम एक एक करके करते हैं !

हिंदुत्व की वैज्ञानिक सोच विज्ञान का शुद्ध रूप है उपलब्ध ज्ञान को जिज्ञासा के माध्यम से, प्रश्नों के माध्यम से शुद्ध किया जाता है, कोई बात है तो क्यों है, कैसे है, इसके पीछे कोई तार्किक आधार है क्या, ऐसे प्रश्नों के माध्यम से हम सत्य के अधिक से अधिक निकट पहुँच पाते हैं, जिस संस्कृति में, जिस समाज में जिज्ञासा को प्रोत्साहित किया जाता है, तर्क करने को प्रश्रय दिया जाता है, वही संस्कृति आगे बढ़ती है, इस सम्बन्ध में हिन्दू समाज अतुलनीय रूप से आगे रहा है, हमारे तो ग्रन्थ भी प्रश्नों से ही प्रारंभ होते हैं – अथातो ब्रह्म जिज्ञासा, सोचें तो कितनी बड़ी बात है, हम ब्रह्म को, ईश्वर को भी अपनी जिज्ञासा की परिधि में लाते हैं, ब्रह्म या ईश्वर को भी, जो कि सर्वशक्तिमान है, हम मात्र विश्वास का पात्र नहीं मानते, भारत में ही हिन्दू समाज के अतिरिक्त जो दो प्रमुख समाज हैं, मुस्लिम और ईसाई, उनसे हिन्दू समाज की हम तुलना करें तो पाएँगे कि ऐसे तर्क करने की स्वतंत्रता वहाँ उपलब्ध नहीं है, अल्लाह या पैगम्बर साहब या यहोबा या यीशु मसीह वहाँ तर्क के विषय नहीं हैं, वे मात्र आस्था और विश्वास के पात्र हैं।

हम पाएंगे कि विश्व में इसी कारण जितने भी वैज्ञानिक हुए हैं, उन्होंने ईसाइयत और इस्लाम की सोच के आगे जाकर ही खोज या आविष्कार किये, उदहारण के लिए अगर हम

आस्था पूर्वक विश्वास किये बैठे रहते कि पृथ्वी चपटी है, सूरज पश्चिम में किसी दलदल में धंस जाता है आदि आदि तो क्या आज जैसी प्रगति देखने को मिलती है, वह कभी मिल पाती? दूसरी ओर हम पाएँगे कि सभी वैज्ञानिक आविष्कार और खोजों ने हिन्दू मान्यताओं की ही पुष्टि की है, चाहे वह पृथ्वी के सूर्य की परिक्रमा करने की बात हो चाहे वह पेड़ पौधों में जीवन होने की बात हो, इसका कारण है कि हमारे पूर्वजों ने, हमारे मनीषियों ने विज्ञानिक सोच को प्रश्रय दिया और वैज्ञानिकता को जीवन का आधार बनाया।

हिन्दू समाज सुधारवादी समाज है हिन्दुओं की तर्क को प्रोत्साहित करने की प्रवृत्ति हिन्दू समाज को सुधारवादी बनाती है, हिन्दू समाज अपने अन्दर व्याप्त कुरीतियों को शीघ्रता से छोड़ पाता है, सामान्यतः हम पाएँगे कि कुरीतियों के विरुद्ध जागरण अभियान हिन्दू समाज के अन्दर से ही उठे और पल्लवित हुए, उदहारण के लिए हम सती प्रथा को ले, किन्हीं कारणों से हिन्दू समाज में सती प्रथा प्रचलित हो गई, यद्यपि जब प्रथा सर्वाधिक प्रचलित थी तब भी सती होने के प्रसंग बहुत कम ही होते थे, सती प्रथा के विरुद्ध हिन्दू समाज से ही पुकार उठी और हिन्दू समाज ने सती प्रथा का त्याग किया, आज सती प्रथा का लेश भी शेष नहीं है, इसी प्रकार हम जाति व्यवस्था को देखे, कभी धर्मान्तरण रोकने के लिए यह व्यवस्था विकसित हुई, किन्तु इसमें गंभीर दोष उत्पन्न हुए और यह व्यवस्था हिन्दू समाज पर कलंक बन गई, ऐसे में हिन्दू समाज में ही इसका विरोध हुआ और विभिन्न सुधारवादी व्यक्तियों ने इसको तिरोहित करने का आहवान किया, स्वतंत्रता के पश्चात् समाज में जाति आधारित भेदभाव को समाप्त कर वंचित समाज को आगे लाने के लिए आरक्षण की व्यवस्था हिन्दू नेतृत्व ने ही की, आज जातिगत भेदभाव को हिन्दू समाज का बड़ा भाग अमान्य कर चुका है और सम्भवतः अगली पीढ़ी तक यह भेदभाव पूरी तरह से तिरोहित हो जायेगा।

इसी क्रम में हम बहु विवाह की प्रथा को ले सकते हैं, हिन्दू समाज ने स्वयं इस प्रथा का त्याग किया, विरोध के रहते हुए भी हिन्दू नेताओं ने हिन्दू कोड बिल लाकर हिन्दू समाज के कई दोषों का समाधान किया, इसी प्रकार हिन्दू समाज ने दहेज प्रथा को त्यागने में स्वयं तत्परता दिखाई पहले हिन्दू बड़े परिवार और बहुत सारे बच्चों में विश्वास करते थे, किन्तु समय की मांग को देखते हुए हिन्दुओं ने छोटे परिवार अपना लिए है।

ऐसा सुधारवादी दृष्टिकोण हमें अन्य मत पंथों को मानने वाले समाजों में सामान्यतः देखने को नहीं मिलता, ईसाई समाज में हम पाते हैं कि अभी तक अविश्वसनीय चमत्कारों की बात को अधिकारिक मान्यता है, यहाँ तक कि ईसाई संतों के निर्धारण के लिए अभी तक ऐसी दकियानूसी प्रथा है कि उनके कुछ चमत्कार होने चाहिए, मुस्लिम समाज भी अपनी तीन तात्कालिक तलाक और हलाला जैसी कुछ कुरीतियों को छोड़ने के लिए प्रस्तुत नहीं है।

हिन्दुओं के श्रद्धा के केंद्र भारत में ही है हम पाते हैं कि हिन्दुओं के किसी भी मत की बात हम करें, चाहे वह शैव हो, चाहे शाक्त हो, चाहे वैष्णव हो, चाहे सामान्य सनातनी हो, चाहे आर्यसमाजी हो, चाहे वह बौद्ध हो, चाहे वह जैन हो, चाहे वह सिख हो, चाहे वह सहजधारी सिख हो, चाहे वह शंकरी हो, चाहे वह रामानंदी हो, चाहे वह गायत्री परिवार को मानने वाला हो, चाहे वह अन्य किसी पंथ को मानने वाला हो, चाहे तो वह किसी भी पंथ को न मानने वाला हो, उसकी आस्था के केन्द्र भारत में हैं, और पूरे भारत में है।

इसकी तुलना में इस्लाम के अनुयायियों के श्रद्धा के केन्द्र भारत के बाहर हैं, इसी प्रकार ईसाईयों के आस्था के केन्द्र भी भारत के बाहर हैं, इनकी आस्था के केन्द्र भारत के बाहर होने के कारण इन्हें अरबी या अंग्रेजी भारतीय भाषाओं की तुलना में अधिक प्रिय होती है, देश के वातावरण के विपरीत परिधान इन्हें पसंद आते हैं, भारत जैसे गर्म देश में काले बुर्के तर्कहीन लगते है, कोट-पेंट-टाई असहज लगते हैं, लेकिन मुस्लिम और ईसाईसों को यह पसंद आते हैं क्योंकि जहाँ उनकी आस्था है, वहाँ के लोग यही पहनते हैं।

आस्था का यह प्रभाव यह भी तय करता है कि आपके नायक कौन होंगे, हिन्दुओं के नायक जहाँ चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक, राजा दाहिर, राणा सांगा, महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द जी आदि हैं, मुस्लिमों में नायक बाबर, अकबर, औरंगजेब आदि हैं, अंतर स्पष्ट है, हिन्दुओं के नायक देश के गौरव हैं जबकि अहिंदुओं के नायक देश के आक्रान्ता हैं।

आस्था का यह प्रभाव आपके नामों को भी तय करता है, हिन्दू नाम जहाँ भारतीय संस्कृति के द्योयोतक होते हैं, ईसाई नाम पश्चिमी देशों के नायकों के नामों पर होते हैं, मुस्लिम नाम तो भारत के शत्रुओं के नामों पर रखे जाते हैं, एक नायक नायिका ने तो अपने बच्चे का नाम एक आततायी तैमूर के नाम तक पर रखा और उसमें वे गर्व अनुभव कर रहे हैं।

भारत को भौगोलिक अखण्डता की दृष्टि से देखें तो हिंदुत्व ही इसकी गारन्टी है, भारत कभी बहुत विशाल हुआ करता था, किसी कालखंड में यूरेशिया महाद्वीप को जम्बू द्वीप कहा जाता था, इसमें आर्यों के प्रभाव के क्षेत्र को आर्यावर्त कहते थे, इस आर्यावर्त में भरतखण्ड भारत को कहते थे।

आर्यावर्त में वर्तमान ईरान और तिब्बत सहित बहुत बड़ा भू-भाग होता था, भरतखण्ड में वर्तमान अफ़गानिस्तान से लेकर वर्तमान इंडोनेशिया तक का अविचल भाग था, यह भूभाग 82 लाख वर्ग किलोमीटर के लगभग होता था, विचार करें कि अफ़गानिस्तान किस कारण से भारत से पृथक हुआ? इंडोनेशिया किस कारण से भारत से पृथक हुआ? श्रीलंका, मालदीव, बर्मा (ब्रह्मदेश), थाईलैंड, कबोडिया, किस कारण भारत से पृथक हुए? तो हम पाएँगे कि हिन्दू जनसंख्या या हिन्दुत्व का भाव कम होने के कारण के अतिरिक्त अन्य कोई कारण नहीं था, बौद्धों में मन में बात आई कि वे हिन्दू नहीं हैं, बौद्ध बहुल भाग भारत से पृथक हो गए, इसी प्रकार बहुत से भूभाग में मुस्लिम बहुलता में आ गए, ये भाग भारत से पृथक हो गए, हमारे देश के कई भाग कब पृथक हुए, इसका हमें पता ही नहीं चला, मगर हाल में पाकिस्तान के पृथक होने का इतिहास तो सबको ज्ञात है, आज भारत मात्र 32 लाख वर्ग किलोमीटर में सिमट गया है।

आज भारत की अखण्डता को चुनौती कहाँ कहाँ मिल रही है, इसका हमें विश्लेषण करना होगा, थोड़े से विचार से ही हम पाएँगे कि जिन जिन क्षेत्रों में हिन्दू कम हो गए हैं, वहीं वहीं देश की अखण्डता को खतरा है, फिर चाहे वह कश्मीर हो या मिजोरम हो या नागालैंड हो।

इसी संस्कृति ने हमें देश के धर्म पर आधारित विभाजन के उपरांत भी मुस्लिमों के यहाँ रहने का सम्मान करने की प्रेरणा दी, हमारे देश में हिन्दुओं के प्रबल बहुमत के उपरांत वहाँ अहिंदू समाज के लोग सर्वोच्च पदों पर आसीन हुए है, देश में अहिंदू न मात्र एकाधिक बार राष्ट्रपति रह चुके हैं, बल्कि उन्हें

भरपूर लोकप्रियता भी प्राप्त हुई है।

विचार कर देखें कि क्या हम अमेरिका या किसी भी ईसाई बहुल देश में गैर ईसाई के राष्ट्र प्रमुख चुने जाने की कल्पना भी कर सकते हैं? क्या हम कभी किसी मुस्लिम बहुल देश में गैर मुस्लिम के राष्ट्र प्रमुख चुने जाने की कल्पना भी कर सकते हैं? अधिक तो क्या कहें, क्या हम नागालैंड या कश्मीर में किसी हिन्दू के मुख्यमंत्री चुने जाने की कल्पना कर सकते हैं? जबकि हमने कितने ही हिन्दू बहुत राज्यों में मुस्लिम मुख्यमंत्री चुने हैं। उदहारण स्वरूप बताएं तो सैयदा अनवरा तैमुर 1980 में असम की मुख्यमंत्री चुनी गई। इसी प्रकार बिहार में अब्दुल गफूर, केरल में मोहम्मद कोया, महाराष्ट्र में अब्दुल रहमान अंतुले और राजस्थान में बरकतुअल्ला खान मुख्यमंत्री रहे, जबकि कश्मीर में कभी कोई हिन्दू मुख्यमंत्री नहीं बन सका।

हिन्दुओं के बाहुल्य पर संकट – एक बात हमारे ध्यान में आती है। भारत की जनसंख्या में हिंदुओं का अनुपात लगातार घट रहा है और अहिन्दुओं का अनुपात लगातार बढ़ रहा है। 1951 में हिन्दु 84.10 % और मुस्लिम 9.80: थे। 2011 में हिन्दू 79.80% और मुस्लिम 14.23% हो गए हैं। निःसंदेह भारत में हिन्दुओं का घटता अनुपात बड़ा डरावना है। अनुभव यह कहता है कि जिस जगह हिन्दू घटेगा, वहां वहां से देश कटेगा। पूर्व में अफ़गानिस्तान, इंडोनेशिया और हाल ही में पाकिस्तान इसका उदहारण है।

हिन्दू कम हो गया तो क्या होगा? देश में दंगे उन्हीं स्थानों पर होते हैं जहाँ अहिंदू थोड़ी अच्छी संख्या में हैं – जैसे मेरठ, मुजफ्फरनगर, बनारस, अलीगढ़, अहमदाबाद, हैदराबाद, भागलपुर, भोपाल आदि। ऐसे ही जहाँ एक अन्य अहिन्दू संप्रदाय बड़ी संख्या में बढ़ रहा है जैसे ओडिशा के फूलबानी/गजपति जिले में वहां भी दंगे हाल में दिखने को मिले है। अतः इस बात की प्रबल संभावना है कि अगर भारत में हिन्दू अल्पसंख्यक हो गया तो भारत से धर्मनिरपेक्षता, उदारवाद, समाप्त हो जायेंगे। साथ ही हिन्दू के अल्पसंख्यक होने के बाद हिन्दुओं का वैसे ही सफाया कर दिया जा सकता है जैसा पाकिस्तान और बांग्लादेश में कर दिया गया है, या जैसे अमरीका ऑस्टेलिया में वहां के मूल धर्मावलम्बियों का कर दिया गया था।

क्या अहिंदुओं को हिन्दू बनाना नैतिकता की दृष्टि से ठीक होगा? वैसे भी भारत में रहने वाले लगभग सभी अहिन्दू कनवर्टड हैं। किसी समय आक्रांताओं के दबाव में अथवा अनुचित प्रभाव में आकर इन्होंने मत परिवर्तन कर लिया। इस प्रकार ये हमारे भटके हुए भाई ही हैं। इन्हें अपने मूल धर्म में वापस लाना हमारा नैतिक कर्तव्य एवं अधिकार दोनों हैं। अतः इस पवित्र कार्य में भारतीय हिन्दु शुद्धि सभा निरंतर 95 वर्षों से एतिहासिक कार्य कर रही है, तो आइए हम भी अपना एक योगदान निश्चित कर अपने भाईयों को विधर्मी होने से बचाएँ।

– डॉ देवेश प्रकाश आर्य
9968573439

आर्य समाज के वरिष्ठ वैदिक विद्वान, शोधार्थी, चिन्तक, लेखक, इतिहासज्ञ
डॉ. भवानीलाल भारतीय का निधन – आर्यजगत में शोक

आर्यसमाज को वैदिक विद्वान, विचारक, वक्ता, लेखक एवं चिन्तक रूप में अपनी अमूल्य सेवाएं देने वाले प्रख्यात साहित्यकार डॉ. भवानीलाल भारतीय जी का दिनांक 11 सितम्बर, 2018 को 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका जन्म 1 मई, 1928 को राजस्थान के नागौर जिले में स्थित परवतक्ष में हुआ था। अपने छात्र जीवन में ही वे आर्यसमाज से जुड़े। उन्होंने हिन्दी और संस्कृत से एम.ए. किया। वे पंजाब विश्वविद्यालय दयानन्द शोध पीठ के डायरेक्टर रहे। आपके निर्देशन में अनेक विद्यार्थियों ने अपने शोध कार्यों को पूर्ण किया।

स्व. श्री भवानी लाल भारतीय जी अपने सम्पूर्ण जीवन में भारत सहित अन्य अनेक देशों में आर्यसमाज एवं वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में संलग्न रहे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार दिनांक 12 सितम्बर, 2018 को किया गया। भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के प्रधान श्री नरेन्द्र वलेचा जी ने उनके निधन को आर्यजगत की अपूर्णीय क्षति बताते हुए शोक व्यक्त किया। शुद्धि सभा की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि दी ।

महामंत्री

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

हतभाग्य हिन्दू-जाति! तेरा पूर्वदर्शन है कहाँ?
वह शील, शुद्धाचार, वैभव देख, अब क्या है यहाँ?
क्या जान पड़ती वह कथा अब स्वप्न की-सी है नहीं?
हम हैं वहीं, पर पूर्व-दर्शन दृष्टि आते हैं कहीं? ॥1॥

बीती अनेक शताब्दियाँ पर हाय! तू जागी नहीं,
यह कुम्भकर्णी नींद तूने तनिक भी त्यागी नहीं।
देखें कहीं पूर्वज हमारे स्वर्ग से आकर हमें,
आँसू बहावें शोक से, इस वेश में पाकर हमें॥2॥

अब भी समय है जागने का देख आँखें खोल के,
सब जग जगाता है तुझे, जगकर स्वयं जय बोल के।
निःशक्य यद्यपि हो चुकी है किन्तु तू न मरी अभी,
अब भी पुनर्जीवन-प्रदायक साज हैं सम्मुख सभी॥3॥

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, जान लो इसका पता,
जो थे कभी गुरु, है न उनमें शिष्य की भी योग्यता।
जो थे सभी से अग्रगामी, आज पीछे भी नहीं,
है दीखती संसार में विपरीतता ऐसी कहीं?॥4॥

दुर्दैव-पीड़ित जो पुराने चिह्न कुछ कुछ रह गये,
देखो, न जाने भाव कितने व्यक्त करते हैं नये।
हा! क्या कहें आरम्भ ही में रुँध रहा है जब गला,
भगवान क्या से क्या हुए हम, कुछ ठिकाना है भला॥5॥

कुछ काल में ये जीर्ण पहले चिह्न भी मिट जाएँगे,
फिर खोजने से भी न हम सब मार्ग अपना पाएँगे।
जातीय जीवन-दीप अब भी स्नेह पावेगा नहीं,
तो फिर अँधेरे में हमें कुछ हाथ आवेगा नहीं॥6॥

अब भी सुधारेंगे न हम दुर्दैव-वश अपनी दशा,
तो नाम-शेष हमें करेगा काल ले कर्कश कशा।
बस टिमटिमाता दीख पड़ता आज जीवन-दीप है,
हा दैव! क्या रक्षा न होगी सर्वनाश समीप है? ॥7॥

निज पूर्वजों का वह अलौकिक सत्य, शील निहार लो,
फिर ध्यान से अपनी दशा भी एक बार विचार लो।
जो आज अपने आपको यों भूल हम जाते नहीं,
तो यों कभी सन्ताप-मूलक शूल हम पाते नहीं॥8॥

निज पूर्वजों के सद्गुणों को यत्न से मन में धरो,
सब आत्म-परिभव-भाव तज निज रूप का चिन्तन करो।
निज पूर्वजों के सद्गुणों का गर्व जो रखती नहीं,
वह जाति जीवित जातियों में रह नहीं सकती कहीं॥9॥

किस भाँति जीना चाहिए, किस भाँति मरना चाहिए,
सो सब हमें निज पूर्वजों से याद करना चाहिए।
पद-चिह्न उनके यत्नपूर्वक खोज लेना चाहिए,
निज पूर्व-गौरव-दीप को बुझने न देना चाहिए॥10॥

समाजों का सरताज

समाजों का सरताज यही है, जन-जन की आवाज़ यही है।
प्रिय है हमको आर्यसमाज, अमर रहेगा आर्यसमाज।।
वेद ज्ञान की पावन गंगा, बहा रहा है आर्यसमाज।
घर-घर से अज्ञान-अंधेरा, हटा रहा है आर्यसमाज।।
मतवादों पंथों के झगड़े, मिटा रहा है आर्यसमाज।
जन्मकाल से मनुष-मात्र को, उठा रहा है आर्यसमाज।।
आर्य समाज प्रेम का प्रेरक, द्वेष दम्भ का नाशक है।
वैदिक धर्म दिवाकर का यह, उज्ज्वल ज्ञान प्रकाशक है।।
आर्यसमाज सभी से सब जन, प्रेम करें सिखलाता है।
आर्यसमाज निर्बल की रक्षा, उत्तम धर्म बताता है।।
आर्यसमाज गिरे बिछुड़ों को, बढ़कर गले लगाता है।
आर्यसमाज सभी का साथी, सबको एक बनाता है।।
प्रिय आर्यसमाज अमर रहे

महात्मा हंसराज-वर्तमान समय में प्रासंगिकता

श्वेतवस्त्रधारी संन्यासी दयानन्द एंग्लो वैदिक शिक्षा व्यवस्था के पुरोधा आर्य जगत् के देदीप्यमान नक्षत्र, क्रान्तिकारी शिक्षाविद्, महान् तपस्वी, धैर्यवान्, सहनशील, दृढ़ ईश्वर विश्वासी, परोपकारी, महर्षि देव दयानन्द के सच्चे अनुयायी वैदिक आर्य मान्यताओं के प्रचारक, शुद्धि कार्यों के लिए समर्पित, अत्यंत विनम्र, विनीत महात्मा हंसराज को यदि हम आर्य जन सही अर्थों में नमन करना चाहते हैं तो उनके जीवन चरित्र, आर्य मान्यताओं सिद्धांतों से शिक्षा लेकर वर्तमान में उनकी उपयोगिता को समझें और उन कार्यों को आगे बढ़ाएँ। बारह वर्ष की आयु में उनके पिता का देहान्त हो गया और गृहस्थी की सारी जिम्मेदारी डाक विभाग में कर्मचारी उनके बड़े भाई लाला मुल्खराज पर आ पड़ी। हम महात्मा हंसराज के जीवन के इन गुणों की चर्चा वर्तमान समय में उनकी उपयोगिता प्रासंगिकता के साथ करते हैं।

1. श्वेतवस्त्रधारी संन्यासी : आर्य सिद्धांतों के प्रचार, प्रसार, शिक्षा व्यवस्था में क्रान्ति, दुखियों, पीड़ितों की सेवा के लिए सम्पूर्ण जीवन समर्पित करके यज्ञमय कर लेने के कारण महात्मा हंसराज श्वेत वस्त्रों में संन्यासी कहलाए। यदि हम उन्हें नमन करना चाहते हैं तो वर्तमान समय में व्याप्त विषमताओं, कुरीतियों, पाखंडों के विरुद्ध और आर्य सिद्धांतों के प्रचार के लिए जीवन समर्पित करने का संकल्प लेना होगा।

2. क्रान्तिकारी शिक्षाविद् : पुरातन सनातन वैदिक परम्पराओं शिक्षा पद्धति को नवीन एंग्लो शिक्षा के साथ जोड़ कर संस्कार देने वाली शिक्षा प्रणाली डी.ए.वी. आन्दोलन के पुरोधा ने शिक्षा में संस्कारों पर बल दिया। *''धर्मो रक्षति रक्षितः, धर्म एव हतो हन्ति''* को समझ कर शिक्षा में धर्म शिक्षा जोड़ कर धर्म की रक्षा और रक्षित धर्म द्वारा मनुष्य की रक्षा का भाव दिया। महात्मा हंसराज ने इस शिक्षा व्यवस्था के माध्यम से स्पष्ट संदेश दिया कि वही शिक्षा उपयोगी है जो संस्कारों के साथ दी जाए। मैकाले की गुलामी की प्रतीक शिक्षा प्रणाली क्लर्क, मैनेजर, डॉक्टर, इंजीनियर तो बना सकती हैं परंतु अच्छे संस्कार देकर अच्छा मनुष्य बनाना केवल महात्मा हंसराज के डी.ए.वी. आन्दोलन के माध्यम से ही संभव है। वर्तमान समय में यदि हम महात्मा हंसराज को सच्ची श्रद्धांजलि देना चाहते हैं तो हमें डी.ए.वी. आन्दोलन से जुड़ना होगा और शिक्षा में संस्कारों का समन्वय करना होगा फिर चाहे कोई तथाकथित सेक्यूलर शिक्षा के भगवाकरण का आरोप लगाए।

3. त्यागी : त्याग का भी त्याग महात्मा हंसराज के जीवन का उद्देश्य रहा। अपना संपूर्ण जीवन देव दयानन्द द्वारा दिए आर्य सिद्धांतों के प्रचार प्रसार, डी.ए.वी. आंदोलन के उत्थान और पीड़ितों दुखियों की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। महात्मा जी का जीवन त्याग का अनुपम उदाहरण था। 26 वर्ष तक अवैतनिक प्राचार्य के पद पर कार्य करते हुए सभी कर्मचारियों अध्यापकों को वेतन बांट कर भी खुद खाली हाथ रहने वाले महात्मा हंसराज ने इस पद का भी त्याग कर दिया। वर्तमान में महात्मा जी के त्यागी जीवन से प्रेरणा लेकर वेद के संदेश "तेन त्यक्तेन भुंजीथा" के भाव को हमें अपने जीवन में धारण करना होगा तभी हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि देने के योग्य कहलाएँगे ।

4. तपस्वी : महात्मा हंसराज अपनी त्याग की पराकाष्ठा के कारण एक सच्चे तपस्वी थे। सर्वस्व त्याग के फलस्वरूप अवैतनिक कार्य करने के कारण उनका जीवन अत्यंत दरिद्रता और अभावों से ग्रस्त था। कार्य की अधिकता से उन्हें क्षयरोग भी हो गया था। लेकिन फिर भी वह डी.ए.वी. आंदोलन व शुद्धि के कार्यों में निरंतर लगे रहे। उनका वाणी का तप अद्भुत था। वाणी पर अधिकार और संयम निश्चित रूप से अनुकरणीय थे। वह अपनी वाणी से किसी के मान का अतिक्रमण नहीं करते थे। वर्तमान समय में जब समाज में केवल एक दिवस विशेष को भूखे रहने का नाम व्रत या एक टांग पर खड़े रहने का नाम तपस्या समझा जाता हो, हमें तपस्वी महात्मा हंसराज के जीवन से प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए।

5. धैर्य : धैर्य और सहनशीलता महात्मा जी के जीवन में कूट-कूट कर भरी हुई थी। डी.ए.वी. शिक्षा प्रणाली के कारण उन्हें समय-समय पर बहुत अपमान सहना पड़ा। वर्ष 1893 में उनके एक घोर विरोधी रामभज दत्त दुर्भावनावश एक बड़ी भीड़ के साथ उन पर हमला करने आए लेकिन महात्मा जी के धैर्य, सहनशीलता और विद्यार्थियों की श्रद्धा के कारण उनकी रक्षा हुई। घोर निर्धनता, अपमान और शारीरिक व्याधियाँ भी उनके धैर्य के कारण उनके दृढ़ संकल्पों को कभी डिगा नहीं पाई। वर्तमान में अपने छोटे-छोटे स्वार्थों के कारण छोटी-छोटी बातों पर धैर्य खोकर क्रोध में वितण्डा करने वाले हम लोगों के लिए महात्मा जी के जीवन से सहनशीलता का गुण सीखना अत्यंत आवश्यक है। धैर्य सहनशीलता के बिना हम सामाजिक समरसता एकजुटता की कल्पना भी नहीं कर सकते।

6. दृढ़ ईश्वर विश्वास : परिवार, समाज में समय-समय पर संघर्षों ने महात्मा जी की कठिन परीक्षाएँ ली। ईश्वर पर दृढ़ विश्वास के कारण महात्मा हंसराज जीवन की हर पारिवारिक सामाजिक परीक्षा में उत्तीर्ण हुए । एक बार अर्धांगिनी की मृत्यु, बेटे के कारावास और उस पर पीपल्स बैंक के टूटने के कारण उन्हें बैंक का भुगतान करना था, तब उनकी बेटी ने विचलित होकर पूछा "पिता जी, ईश्वर है भी या नहीं?" तो महात्मा जी ने एक सच्चे स्थितप्रज्ञ का परिचय देते हुए उत्तर दिया "बेटी! वह ईश्वर है और जो करता है ठीक करता है।" वर्तमान में अपनी प्रत्येक उपलब्धि का श्रेय स्वयं लेने तथा प्रत्येक समस्या के लिए ईश्वर पर दोष लगाने या अनीश्वरवादी हो जाने वाले समाज को महात्मा जी के इस दृढ़ ईश्वर विश्वास से शिक्षा लेनी चाहिए।

7. सदैव प्रसन्न रहना : मान और अपमान प्रत्येक स्थिति में समभाव बनाये रखना उनके जीवन की विशेषता थी। अपमान से कभी विचलित न हुए और मान से कभी फूल कर कुप्पा न बनें। अपने कर्तव्य कर्म के निर्वहन में महात्मा हंसराज मान अपमान से उपर उठकर सदैव प्रसन्नचित बने रहते थे। घोर दरिद्रता, अभाव, परिश्रम की परकाष्ठा, अपमान कभी उनके मुख से प्रसन्नता को छीन विचलित न कर पाए । वर्तमान समय में बात-बात में उबाल खाने वाले हम लोगों को महात्मा जी ने विषम परिस्थितियों में भी समभाव बनाए रखकर प्रसन्न रहने वाले इस गुण से सीखना होगा।

8. सेवाभाव : महात्मा जी में सेवाभाव कूट-कूट कर भरा हुआ था। 1907 के अवध के अकाल, मुलतान में प्लेग की महामारी या 1918 में गढ़वाल में दुर्भिक्ष या 1921 में शिमला कांगड़ा जम्मू या 1934 में बिहार में भूकंप या 1935 में कोयटा में विनाशकारी भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाओं के समय महात्मा हंसराज जी ने डी.ए.वी. के अपने विद्यार्थियों के साथ मिलकर अपनी शारीरिक व्याधियों की परवाह न करते हुए पीड़ित मानवता की सेवा तन मन धन से की। महात्मा जी के सेवाभाव के इस गुण को हमें अपने परिवारों में वृद्ध माता पिता की सेवा या समाज में दीन दुखियों की सेवा करते हुए अपनाना चाहिए।

9. शुद्धि कार्य : 1921-1922 में केरल में मोपला विद्रोह के समय मुसलमानों ने 2500 हिन्दुओं पर अत्याचार करके जबरन मुसलमान बना लिया तो महात्मा हंसराज ने उनका शुद्धिकरण, घर वापसी करवाई। 1924 में भी कोहट में जब मुसलमानों ने हिन्दुओं पर अत्याचार किए तो महात्मा जी ने न केवल उनकी रक्षा की अपितु आर्थिक सहायता भी दी। वर्तमान में महात्मा जी के इस शुद्धिकरण आंदोलन को गति देने की अत्यंत आवश्यकता है।

10. विनम्रता : प्रत्येक परिस्थिति में विनम्र बने रहने को गुण महात्मा जी में कूट-कूट कर भरा था। तन मन धन से सेवा करते हुए भी महात्मा जी सदैव विनम्र रहते थे। शुद्धि आंदोलन में महात्मा जी ने स्वामी श्रद्धानन्द की भरपूर सहायता की लेकिन जीवनभर महात्मा हंसराज ने स्वामी श्रद्धानन्द को अपना बड़ा भाई माना।

11. स्वाधीनता संग्राम में योगदान : महात्मा हंसराज द्वारा एक आंदोलन के रूप में स्थापित डी.ए.वी. आंदोलन के रूप में स्थापित डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को राष्ट्रवाद की घुट्टी पिलाई जाती थी और डी.ए.वी. संस्थाएँ क्रान्तिकारियों की उत्पत्ति एवं शरणस्थली के प्रमुख केन्द्रों के रूप में उभरे। जहाँ क्रांतिकारियों की गीता के रूप में सुविख्यात सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर कितने ही युवा आजादी के दीवाने बन कर अपना बलिदान दे गए। आज यदि हम महात्मा हंसराज को सच्ची श्रद्धांजलि देना चाहते हैं तो अपने राष्ट्र की स्वतंत्रता, संप्रभुता, अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखने का संकल्प लेना होगा।

महात्मा हंसराज जी के जीवन से इन गुणों तथा वैदिक आर्य मान्यताओं की शिक्षा लेकर हमें अपने जीवन को सफल करने का प्रयास करना चाहिए यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

- नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'
602 जी.एच. 53 सैक्टर 20
पंचकूला, 09467608686

बलिदानियों द्वारा ही हैदराबाद मुक्त हुआ है।

मराठवाडा के औरंगाबाद शहर में "तामिरे मिल्लत" संस्था के कुछ पदाधिकारियों ने अपने देशद्रोही वक्तव्य को उगलते हुए कहा कि मीर उस्मान अली 7 वे निजाम के साथ 'जैसे थे' करार तय होने के पश्चात् भी सरदार वल्लभ भाई पटेल ने धोखाधडी और जबरदस्ती से पुलिस एक्शन के नाम पर सेना भेजकर हैदराबाद रियासत पर कब्जा कर लिया। यह निजाम मीर उस्मान अली के साथ धोखा ही तो था। यह मुक्ति संग्राम काहे का? यह तो धोखाधडी थी, इतिहास को तोड़ मरोडकर पेश किया जा रहा है स्कूलों में *गलत ढंग* से बच्चों को इतिहास पढ़ाया जा रहा है। इसलिए 17 सितम्बर यह हैदराबाद मुक्ति संग्राम दिन के नाम से नहीं मनाया जाना चाहिए। "यह विषैले वक्तव्य हैं" तामिरे मिल्लत के संयोजक डॉ. चिरंजीवी कोल्लूरी, डॉ. एन. पांडुरंग रेड्डी और जियाउद्दीन नय्यर के।

"ऑल इंडिया मजलिस ए-तामिरे मिल्लन" यह हैदराबाद में सन् 1950 में स्थापित संस्था निजाम और "आजाद हैदराबाद" की तरफदारी करने वाली संस्था है। आज हैदराबाद को 65 साल भारत वर्ष में शामिल होने के पश्चात भी यह विद्रोही बेसुरा राग अलाप रहे हैं। उक्त तीनों पदाधिकारी अपने प्रेस वक्तव्य में कहते हैं कि 1947 में लगभग सारी रियासतें हिन्दुस्थान में समाविष्ट हो गयीं लेकिन हैदराबाद रियासत पर भारत सरकार ने शामिल होने के लिए सैनिकी दबाव डाला। निजाम भारत में शामिल नहीं होना चाहता था, इसलिए उसने तत्कालीन सरकार से जैसे थे करार किया। इसका मतलब यह था कि एक वर्ष तक ज्यों कि त्यों तत्कालीन परिस्थिति रखी जाय। लेकिन 12 सितंबर 1948 को प्रधान मंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू विदेश जाने के बाद सरदार पटेल ने हैदराबाद के चारों ओर से रियासत में सेना घुसवा दी। यह निजाम और हैदराबाद के साथ धोखा था। इन तीनों सदस्यों को जान लेना चाहिए कि जब जूनागढ, भोपाल और कश्मीर जैसी मुस्लिम बहुल रियासतें भारत में शामिल कर ली गयी थीं, तो क्या कारण था कि हैदराबाद रियासत इससे अछूती रह जाय। वैसे लॉर्ड मांऊटबेटन के निर्देशानुसार और बहुसंख्य जनता के मतानुसार वह रियासत भारतवर्ष या पाकिस्तान में शामिल हो सकती थी, जबकि भौगोलिक स्थिति और जनमत पाकिस्तान के खिलाफ थे। 89प्रतिशत हैदराबाद की जनता हिन्दुस्थान में शामिल होने की इच्छुक थी, फिर तामिरे मिल्लत के पदाधिकारी यह कैसे कह सकते हैं कि हैदराबाद आजाद भारत में नहीं रहना चाहता था। राज्य जमीन के टुकडे को नहीं वहाँ की जनता और उसकी संस्कृति को कहते हैं।

हैदराबाद की 89 प्रतिशत हिन्दू जनता सन् 1937 से सातवें निजाम के खिलाफ जी जान से संघर्ष कर रही थी। आर्यसत्याग्रह के एक वर्ष पूर्व से अर्थात् 1937 से 1939 तक लगभग 41 आर्यो की हत्याएँ हो चुकी थीं, स्टेट काँग्रेस अपने तरीके से संघर्ष कर रही थी यहाँ तक कि निजाम के मजहब को मानने वाला शोएब उल्लाखाँ हैदराबाद को निजाम से निजात दिलाने के लिए 1948 में शहीद हो गया। इसके बावजूद ये लोग कह रहे हैं कि सरदार पटेल ने हैदराबाद के साथ धोखा किया यह सरासर झूठ और देशद्रोह है। इससे पूर्व तेलंगाना के मुख्यमंत्री की बेटी सांसद कविता ने भी इसी प्रकार के वक्तव्य देकर अपने आपको सुर्खियों में किया था।

उनको भी उत्तर देते हुए मैंने कहा था कि– जब 725 वर्ष पूर्व अर्थात्, ई. सन् 1310 तक यह भाग वरमंगल (वरंगल) के काकतीय वंश के राजाओं का राज्य था। उसके बाद 1724 में आसाफजाही वंश और मध्य एशिया के समरकंद बुखारा जिसका पैत्रिक स्थान था उस निजाम उल्लमुल्क मीर कमरूद्दीन चिन किलिच खान ने हैदराबाद पर अपनी सत्ता प्रस्थापित की। सव्वा दो सौ साल हैदराबाद जनता को गुलाम बनाकर रखने से क्या हैदराबाद विदेशी आक्रान्ताओं का राज्य हो गया? यह तो हैदराबादी जनता और उनकी मातृभूमि के साथ अन्याय है।

निजाम "जैसे थे" करार के अनुसार चुप थोड़े ही बैठा था। करार की आड़ में वह भारत के साथ संघर्ष के लिए अनेक षड्यन्त्र रच रहा था। जैसे, बहुसंख्य हिन्दुओं को बाहर खदेडकर और बिहार उत्तरप्रदेश से मुस्लिम मुहाजिरों को बुलाकर रियासत को मुस्लिम बहुत बनाना, मुस्लिम बहुल बनाकर अन्य राष्ट्रों की सिफारिश से सर्वमत करवाना, रजाकारों को हिन्दुओं पर जुल्म करने के लिए द्वारा पाकिस्तान, गोवा के रास्ते करोडों के हथियार मंगवाये और रजाकारों (हिंस्र मुस्लिम स्वयंसेवक) में बटवाये थे। "जैसे थे" करार द्वारा भारत सरकार ने निजाम को यथास्थिति बनाये रखने के लिए मोहलत दी थी इसका मतलब यह तो नहीं था कि उसका दुरूपयोग कर जनता और भारत सरकार से धोखाधड़ी करे।

"जैसे थे" करार का उद्देश्य यह भी नहीं था कि हैदराबाद पूरी तरह से निजाम को सौंप दिया गया हो। उसका अर्थ यह था कि बातचीत और मेल मिलाप से हैदराबाद को भारत में शामिल करने का कोई रास्ता निकाला जाय। पं. जवाहर लाल नेहरू ने कश्मीर के मामले में जो गलती की थी (राष्ट्र संघ में कश्मीर को ले जाकर) वह गलती गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल हैदराबाद के बारे में नहीं करना चाहते थे। इसलिए एक वर्ष के लिए "जैसे थे" करार दोनों की सहमति से किया गया था। उसका दुरुपयोग पहले निजाम ने किया जब यह सरदार पटेल को पता चला तो उन्होंने यह रास्ता अपनाया और रियासत हैदराबाद को 17 सितंबर 1947 के पश्चात् 1 वर्ष 1 महीना, 1 दिन के बाद निजाम के चंगुल से मुक्त करवाया।

–डॉ. चंद्रशेखर लोखण्डे
–सीताराम नगर, लातूर (महाराष्ट्र)

गौगव्यराज़

गव्य शब्द की रचना गौ +यत् प्रत्यय के योग से हुई है जिसका अर्थ है 'गौ द्वार देने योग्य पदार्थ' अतः गौमाता से सीधे प्राप्त होने वाले पदार्थ 'गव्य कहलाते हैं।

इन गव्यों के साथ विशेष क्रियाओं के करने से जो अन्य पदार्थ प्राप्त होते हैं उन्हें 'उपगव्य' कहते हैं। गौगव्य ब्रह्माण्ड, पिण्ड और पृथ्वी के सन्तुलन के लिए हैं।

1. गव्य :– गौमाता से मूत्र, दूध और गोबर (गोमय) ये तीन 'गव्य' सामान्य रूप से प्राप्त होते हैं जिनकी सर्वोत्तमता जगप्रसिद्ध एवं वेद शास्त्र सिद्ध हैं मूत्र, औषध की भी औषध है। दूध–सम्पूर्ण भोजन एवं अमृत है तथा गोमय चरम एवं परमौषध है यह परमाणु विकरण (रेडिएशन) को रोकने में सक्षम है। इसलिए गौ–गौमय (गोबर) से घर–आँगन, दीवारें तथा पूजा स्थलों का लेपन किया जाता है।

2. उपगव्य :– मनुष्य ने दूध से मुख्य दो उपगव्य और प्राप्त किए अर्थात् खोज की जो छाछ (मठ्ठा) और घृत के रूप में सर्वविदित हैं। वेद और आयुर्वेद के अनुसार येगव्य पंचमहाभूतों के साक्षात् प्रतिनिधि हैं।

गौश्रीते मधौ मंदिरे विवक्षणे सीदन्त : ऋ. 8/21/5

हे मनुष्य गव्य तेरे लिए मधुर आनन्द स्रष्टा संसार में आनन्द ले उपस्थित हैं।

इस प्रकार मूत्र, गोबर, दूध, छाछ और घृत पञ्चगव्य कहलाते हैं जो धरती पर सुख, शान्ति, धन, ऐश्वर्य और आनन्द के आधार भूत तत्व हैं। गौमूत्र–वायुतत्व, गौगोबर–पृथ्वीतत्व, दूध–जलतत्व छाछ–आकाश तत्व और घृत–अग्नि तत्व के रूप में विद्यमान हैं। अतः सुगव्यमिन्द्र दद्धि नः ऋ.8/13/33 हे प्रभो ! हमें अच्छे गव्य दिलाएं। जिससे हमारा शरीर पाँचों प्रकार से स्वस्थ हो।

पाँचों तत्वों को असमानता से ही शरीर तथा संसार में रोग पैदा होते हैं पृथ्वी रोग–स्थूल शरीर में कमी या अधिकता होना, वायु रोग–वायु की अधिकता या न्यूनता से अस्सी रोग होना, जलरोग–जल के अभाव और प्रभाव से रोग उत्पत्ति होना जैसे कफ विकार, शुष्कता ।

अग्नि रोग – अग्नि अधिक से बुखार और पित्त रोग होना।

आकाश रोग – कम होने से तुतलाना, ठीक न सोचपाना, अधिक सोचना, नकारात्मक सोचना अर्थात् मानसिक बीमार होना।

3. उपगय (ख) :– इन्हीं गौगव्यों के साथ–साथ मनुष्य के बुद्धि योग से दूध द्वारा 'दही' और 'मक्खन' तथा गोमय से 'भस्म' ये तीन उपगव्य और प्राप्त हुए जो ऊर्जा केन्द्र हैं जिनसे शरीर को क्रमशः उदर, बल और प्राण ऋर्जा प्राप्त होती है।

4. उपगव्य (ग) :– यह 'गव्य' गौमाता की शारीरिक ऊर्जा के रूप में स्पर्श से प्राप्त होता है । जिससे शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक पापक्षय करने की सामर्थ्य प्राप्त होती है। गौ–माता के स्पर्श मात्र से पचास प्रतिशत रोग शान्त होने का दावा आयुर्वेद करता है।

अचिन्त्य शक्ति इति प्रभाव'

शक्ति को हम सोच नहीं सकते हैं उसे प्रभाव करते हैं। जो गौस्पर्श में विद्यमान है। इस प्रकार गौमाता से हमें नौ गव्य प्राप्त होते हैं जिन का औषधीय एवं रोग निदान सम्बधी वेद, आयुर्वेद और अन्य शास्त्रों के प्रमाणों द्वारा क्रमशः आगे वर्णन किया जाएगा।

गव्यसिद्ध, डॉ. रघुराज शास्त्री,
9968286089
(आर्य समाज, इन्द्र पुरी, दिल्ली)

आज का भारत

जिस राष्ट्र के, अंग्रेजों की कुटिल नीति के कारण कई टुकड़े हो गये और पाकिस्तान, बांग्लादेश, ब्रह्मदेश, अफगानिस्तान, तिब्बत, नेपाल, भूटान, पाक अधिकृत कश्मीर यह भारत के अन्तर्गत थे वह सब ईरान को आर्यन कहा जाता था।

अब 1947 में भारत स्वतंत्र हो गया। देश स्वतन्त्र कैसे हुआ, विचार करें।

आपका चक्रवर्ती राज्य था। महाराजा दाहिर ने मुकाबला किया किन्तु देशद्रोही पुजारियों ने झंडा झुका दिया और झूठे पाखंड में फंसकर भारत हारा। जयचन्द के कारण पृथ्वीराज चौहान हारे। मुसलमानों के विरुद्ध बहुत वीर खड़े होते रहे। बाबर का मुकाबला राणासांगा ने बड़ी वीरता से किया लेकिन देशद्रोही सदा हुए हैं, बाबर का शासन स्थापित हो गया। अकबर ने साम्राज्य को फैलाया किन्तु महाराणा प्रताप ने अकबर का ऐसा मुकाबला किया कि अकबर की फिर आक्रमण करने की हिम्मत नहीं हुई। फिर औरंगजेब के अत्याचारों से जनता कराह उठी। छत्रपति शिवाजी एवं गुरु गोबिन्द सिंह जी खड़े हो गये और मुगलों का राज्य छिन्न-भिन्न कर दिया।

मुसलमानों ने करीब 700 वर्ष राज्य किया। उनसे अंग्रेजों ने राज्य छीन लिया और भारत के 560 राजा छोटे-छोटे राज्य लेकर बैठे रहे या आपस में लड़ते रहे और सारा देश अंग्रेजों का गुलाम हो गया। करीब 200 वर्ष तक उन्होंने राज्य किया। वैसे दिल्ली पर तो 1857 से 1947 तक नब्बे वर्ष ही राज्य किया।

अंग्रेजों का राज्य उखाड़ने में सबसे प्रथम और महत्त्वपूर्ण भूमिका आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने निभाई। 1857 की क्रांति के पीछे उन्हीं का हाथ था और वह मेरठ में 9 बार पधारे। रानी झांसी, तात्या टोपे, कुंवर सिंह, नाना साहब सभी महर्षि दयानन्द के शिष्य थे।

महर्षि दयानन्द 1857 की क्रांति के समय तीन वर्ष अज्ञातवास में रहे और क्रांति का संचालन किया।

कई कारणों से 1857 की क्रांति असफल हो गई और जनता अंग्रेजी अत्याचारों से डरकर सहम गई। अंग्रेजों ने मुसलमानों की भांति भयंकर अत्याचार किये। अनगिनत लोगों को फांसी पर चढ़ा दिया गया, महिलाओं और बच्चों को भयंकर यातनाएं दी गई। ऐसे समय में वीर क्रांतिकिारी पैदा होते रहे और अंग्रेजों से लोहा लेते रहे।

अंग्रेजों की कमर चन्द्रशेखर आजाद, सरदार भगत सिंह, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, ठाकुर रोशन सिंह, अशफाकउल्ला और अन्य क्रांतिकारियों ने तोड़ दी।

महर्षि दयानन्द ने 1875 में आर्य समाज की स्थापना बम्बई में की और फिर सर्वत्र सारे देश के गांव-गांव तक आर्य समाज फैल गया, जिसके मुख्य समाज सुधार के कार्य थे- स्त्री शिक्षा को प्रमुखता से लागू करना। अतः आर्य कन्या गुरुकुल और पाठशालाएं खोली गई।

जन्म से जाति-पाति के पाखंडों पर प्रहार किया गया कि मनुष्य जाति एक है, कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था लागू होनी चाहिए। धर्म केवल एक ही है। वह वैदिक धर्म है। अन्य सब मत हैं। भाषा संस्कृत ही मुख्य है। विशेष प्रचार हिन्दी का होना चाहिए। गौरक्षा तो परम धर्म है ही, अन्य सब प्राणियों की रक्षा भी होनी चाहिए। मांसाहार, शराब का सेवन राक्षसी भोजन है, मनुष्य भोजन नहीं।

आर्यसमाज के बड़े-बड़े प्रबुद्ध वक्ता, मनीषी, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, गुरुदत्त विद्यार्थी, कुँ सुखलाल आर्य मुसाफिर, शास्त्रार्थ महारथी अमर स्वामी पं. रामचन्द देहलवी और (डी.ए.वी.) आन्दोलन के सूत्रधार महात्मा हंसराज जी के चमत्कारी प्रभाव से देश स्वतंत्रता की ओर बढ़ा।

भारतीयों में जागरूकता आई और महिलाएं विदुषी होकर प्रथम पंक्ति में आकर खड़ी हो गई, विधवा विवाह प्रारम्भ हो गये। छुआछूत समाप्त हुई। राष्ट्र में क्रांति सी आ गई, लोग स्वदेशी के प्रति जागरूक हो गये, विदेशी कपड़े की होली जलाई गई।

महात्मा गांधी और नेहरू आदि का अहिंसक आंदोलन भी इसमें सहयोगी बना। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने सेना बना आक्रमण कर दिया। अंग्रेजों की कमर टूट गई। तब कहीं देश आजाद हुआ लेकिन अंग्रेज जाते-जाते भी देश के दो टुकड़े कर गये। नेहरू को प्रधानमंत्री बनने की बहुत जल्दी थी। जिन्ना को उभारकर पाकिस्तान बना गये। देश का बंटवारा हिन्दू-मुस्लिम के नाम पर हुआ, जैन, बौद्ध सिख सब हिन्दुओं में गिने गये।

मुसलमानों के पूर्वज चालाक थे मौलाना आजाद जैसों को कांग्रेस में मिलाये रखा और अलग देश भी बन गया। यहां भी रह गये चार-चार विवाह करके अनेक सन्तान पैदा कर जनसंख्या बढ़ाने लग गये। सभी जमीन, मकान साधनों पर भी कब्जा रहा।

उधर पाकिस्तान से हिन्दू मार-मार कर भगा दिये। वहां उनकी क्या हालत है, देखिये बांग्लादेश से कई करोड़ मुसलमान घुस आये। अब भारत फिर नरक बन गया। हिन्दुओं के बड़े नेता ज्यादा उदार बन गये, मुसलमान ज्यों के त्यों जमे रहे। अब विचार करें, भारत का भविष्य क्या होगा, गांधी – नेहरू की अदूरदर्शिता देश भोग रहा है।

– ठाकुर विक्रम सिंह
राष्ट्रीय अध्यक्ष –
राष्ट्र निमार्ण पार्टी

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के 95वें स्थापना वर्ष पर विशेष –

आह्वान

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना महर्षि देव दयानन्द जी सरस्वती के मानस पुत्र स्वामी श्रद्धानन्द जी ने, भारत के विभिन्न प्रान्तों से आये हिन्दू धर्म के 85 प्रतिनिधियों की उपस्थिति में **13 फरवरी सन् 1923 को आगरा (उ.प्र.)** में की थी। आये हुये प्रतिनिधियों में थे :-

प्रथम अधिकारी –

प्रधान – स्वामी श्रद्धानन्द जी !

उपप्रधान – (1) महात्मा हंसराज लाहौर (2) बाबू रामप्रसाद बी.ए. आगरा

महामंत्री – कुंवर माधवसिंह आगरा।

मंत्री – (1) बा. नाथमल आगरा (2) महाशय देवप्रकाश अमृतसर
(3) चौबे बिश्वेश्वर दयाल ।

कोषाध्यक्ष – बाबू चांदमल जी, बी.ए. ।

अन्तरंग सदस्य – (1) श्रीराम आगरा (2) राजा नरेन्द्रनाथ, लाहौर (3) प्रो. गुलशनराय, लाहौर (4) पं. रामगोपाल शास्त्री
(5) पंडित ठाकुरदत्त, लाहौर (6) महाशय खुशहालचन्द लाहौर (7) म. कृष्ण लाहौर (8) म. नारायण स्वामी (9) म. हरगोविन्द गुप्त कलकत्ता (10) कुवंर चांदकरण शारदा अजमेर (11) बा. शालिगराम, आगरा (12) डा. गोकुलचन्द नारंग।

सभा का पंजीकरण 4 दिसम्बर 1924 में कराया गया।

आगरा, मथुरा, लखनऊ होते हुए सभा का मुख्य कार्यालय स्व. सेठ जुगल किशोर जी बिरला द्वारा प्रदत्त भूमि पर 22 मार्च 1926 तक बिरला लाइन्स, कमला नगर, दिल्ली में स्थानान्तरित हुआ, जहाँ आज भी विद्यमान है। सभा का मुख्य उद्देश्य कई शताब्दियों से भय व लोभ से विधर्मी बने हिन्दुओं को पुनः मुख्य धारा में लाना तथा हिन्दुओं में उत्पन्न जातियों से छुआ-छूत प्रथा को समाप्त करके सम्मान से जीवन जीने का मार्ग सुलभ कराना था। इसी उद्देश्य के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने पहले दलितोद्धार व अछूतोद्धार सभा का गठन किया था। निम्न वर्ग समझे जाने वालों के बच्चों, महिलाओं के लिए पाठशालायें खोलकर शिक्षा का प्रचार करना।

शुद्धि सभा द्वारा 13 फरवरी 1923 से स्वामी श्रद्धानन्द जी के नेतृत्व में (23 दिसम्बर 1926 तक) और बाद में मार्च 1931 तक 1 लाख 83 हजार बिछुड़े हुये भाइयों को पुनः हिन्दू धर्म में शामिल किया, 4 हजार महिलाओं अनाथों की रक्षा की 10 हजार के लगभग दलितों को विधर्मी होने से बचाया। 127 शुद्धि सम्मेलन किये गए। 156 पंचायतें कराकर घर वापसी का संदेश दिया। उस समय 48,000.00 रु. शुद्धि संबंधी साहित्य पर व्यय किया। स्वामी श्रद्धानन्द ने उत्तर भारत में पर्वतीय क्षेत्रों में सघन प्रचार करके दलितों को, आर्य उपनाम दिया।

सभा का मुख्य पत्र "शुद्धि समाचार" हिन्दी भाषा में फरवरी 1925 से प्रकाशित किया जा रहा है। सभा के अन्तर्गत शुद्धि के प्रचारक देश भर में कार्य कर रहे हैं तथा विद्यालय चल रहे हैं। दान में दी गई। सम्पत्ति के प्रबंधन हेतु ट्रस्ट बनाया गया, जिसका पंजीकरण 5 अप्रैल 1944 को किया गया। नियति की बिडम्बना देखिये कि हिन्दू शुद्धि सभा के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी, हिन्दू हितार्थ 23 दिसम्बर 1926 को अपना सर्वस्व न्योछावर कर गये और अपने मानस पिता महर्षि देव दयानन्द सरस्वती जी की तरह मौन संदेश दे गये। स्वामी श्रद्धानन्द का यह है अमर संदेश:-

गिरो, उठो, गिर-गिर उठो, उठना मुख्य उद्देश्य।।

विस्तृत जानकारी एवं शुद्धि सभा को सहयोग देने के लिये, कृपया शुद्धि समाचार एवं शुद्धि सभा के सदस्य बने।

– चतर सिंह नागर, महामंत्री

संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी

सभी भाषा विद् इस विषय में एक मत है कि संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है तथा ऋग्वेद सबसे अधिक प्राचीन प्रकाशित ग्रन्थ है। भारत की सभी भाषाओं की वह जननी है। पाश्चात्य भाषाओं पर भी उसका प्रभाव देखा गया है। महामहिम डॉ. राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति ने 11 नवम्बर 1955 में तिरुपति में संस्कृत विश्व परिषद के वार्षिकोत्सव पर संस्कृत को भारतीय भाषाओं की जननी माना था। हमें इस बात का दुःख है कि क्षुद्र राजनीति से प्रेरित कुछ नेता प्रान्तवाद, क्षेत्रवाद की संकीर्णता में उलझकर इस सर्वसम्मत विचारधारा का विरोध आज भी कर रहे हैं। राष्ट्रीय एकता के संवर्धन हेतु, संस्कृत भाषा की महत्ता असन्दिग्ध है। हम देव भाषा संस्कृत के माध्यम से भारत की सभी भाषाओं को एकसूत्र में पिरो सकते हैं जिसका सांस्कृतिक एवं सामाजिक प्रभाव निश्चय ही सुखद परिणाम देने वाला होगा।

मुझे इस बात का बहुत हर्ष है कि मैं पहले की भाँति इस वर्ष भी संस्कृत विश्व परिषद् के वार्षिकोत्सव में भाग ले रहा हूं, जो वैंकटेश्वर की पवित्र नगरी तिरुपति में हो रहा है। मैं संस्कृत का विद्वान् नहीं हूँ और न यह दावा कर सकता हूं कि मैं इस भाषा के अध्ययन के लिए अपनी इच्छा के अनुरूप समय दे सकता हूं।

नम्रतापूर्वक केवल इतना ही कह सकता हूं कि संस्कृत के प्रति मेरी अगाध श्रद्धा और प्रेम है। संस्कृत के प्रति निजी दृष्टिकोण का जब मैं विश्लेषण करता हूं तो इस श्रद्धा के दो कारण दिखाई देते हैं- संस्कृत भाषा की उपादेयता और हमारी भावुकता। संस्कृत वह भाषा है जिसमें भारत की संस्कृति, हमारे अतीत का गौरव तथा भारत की आध्यात्मिक आकांक्षाएं आदि सभी प्रतिबिम्बित होती हैं। भारतीय ज्ञान-भण्डार संस्कृत के अतिरिक्त पाली और प्राकृत में भी उपलब्ध हैं किन्तु ये दोनों भाषाएं भी संस्कृत से मिलती-जुलती हैं। वास्तव में, पाली और प्राकृत का महत्व स्वयं संस्कृत के अध्ययन के पक्ष में एक प्रमाण है, क्योंकि संस्कृत के ज्ञान के बिना इन भाषाओं को ठीक-ठीक समझना सम्भव नहीं। चाहे हम इस देश के प्रसिद्ध दर्शन-शास्त्र का अध्ययन करें अथवा नृत्य तथा संगीत आदि भारत की ललित कलाओं के विकास की खोज करें या इस देश के प्राचीन इतिहास के टूटे हुए क्रम को जोड़ने का प्रयास करें, इन सभी कार्यों के लिए संस्कृत का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

यह सभी जानते हैं कि सुप्रसिद्ध विदेशी विद्वानों ने अपने गहन तथा आलोचनात्मक अध्ययन द्वारा संस्कृत साहित्य की विशेष सेवा की है। यह बाकी निर्विवाद रूप से सत्य है कि उन विद्वानों के अध्यवसाय के बिना मानवीय विचार तथा संस्कृति के विकास में संस्कृत का जो ऊंचा स्थान रहा है, उसे समझना असम्भव हो जाता। रोज़र ने भतृहरि के पदों का डच भाषा में सतरहवीं सदी में अनुवाद किया था। अठारहवीं सदी में विलकिश महाशय ने काशी में अध्ययन किया और भगवद्गीता, हितोपदेश तथा शकुन्तला का अंग्रेजी में अनुवाद किया। शिलर तथा गेटे सरीखे प्रसिद्ध जर्मन कवि इन अनुवादों से अत्यधिक प्रभावित हुए थे। कौलबुक की चिरस्थायी कृतियां-संस्कृत कोश, हिन्दू विधि, संस्कृत व्याकरण और किरातार्जुनीय का अनुवाद-उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में प्रकाशित हुई। लगभग इसी समय रूसी भाषा में रामायण और महाभारत के अनुवाद भी प्रकाशित हुए। रोज़र और मैक्समूलर ने 1840-70 में वेदों का अनुवाद किया। कई विदेशी विश्वविद्यालयों में 100 वर्ष हुए संस्कृत अध्यापन के लिए पृथक् विभाग खोले गये थे। जर्मन और फ्रांसीसी विश्वविद्यालयों में 1792 में ही संस्कृत-अध्यापन की व्यवस्था हो गई थी। आजकल काबुल विश्वविद्यालय में संस्कृत अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाई जाती है।

इन सब बातों के कारण ही मैं समझता हूं कि संस्कृत का पठन-पाठन बहुत उपयोगी है। दूसरी बात, भावुकता के सम्बन्ध में जो मैंने कही, उसकी आधार भी संस्कृत की उपादेयता ही है। जैसा मैंने अभी कहा संस्कृत साहित्य इस देश का बृहत् ज्ञान-भण्डार है, जिसमें इस देश की दर्शन तथा कला सम्बन्धी विचारधारा सन्निहित है। भारत की राष्ट्रीय महत्वाकांक्षाओं और सांस्कृतिक परम्परा का प्रमुख माध्यम होने के अतिरिक्त, संस्कृत आधुनिक भारतीय भाषाओं का उद्गम-स्रोत भी है। दक्षिण की चार भाषाओं पर भी जो भाषा-विज्ञान की दृष्टि से द्रविड़ कुल की भाषाएं हैं, पारस्परिक सम्पर्क तथा आदान-प्रदान के कारण संस्कृत का गहरा प्रभाव पड़ा है।

मैंने प्रायः यह सुना है कि सदियों तक समस्त भारत को एकता के सूत्र में बांधे रखने का श्रेय संस्कृत भाषा को है। मुझे इस कथन में काफी सच्चाई जान पड़ती है। आप कल्पना कीजिए कि दो हजार वर्ष पूर्व जब कि भूगोल तथा विस्तार की दृष्टि से हमारा देश आधुनिक भारत से बड़ा था, दूरस्थ प्रदेशों के निवासी किसी प्रकार पारस्परिक व्यवहार करते होंगे और आपसी सम्पर्क बनाये रखते होंगे। उस प्राचीन काल में जिन दिनों आज की तुलना में यातायात के साधन न होने के बराबर थे, समस्त देश में सामान्य रीति रिवाज धार्मिक विश्वास और लगभग एक जैसी शिक्षा पद्धति किस प्रकार सम्भव हुई होगी। साधारण अभिव्यक्ति और साहित्य का एक सामान्य माध्यम प्राप्त होने के कारण ही सब कुछ हो सका, और यह निर्विवाद है कि वह माध्यम संस्कृत भाषा थी। प्रादेशिक भाषाएं निस्सन्देह विभिन्न प्रदेशों में बोली जाती थीं किन्तु प्राचीन काल में यदि किसी भाषा को राष्ट्रभाषा कह सकते थे तो वह संस्कृत थी। इसका उन दिनों वह पद रहा होगा जो आधुनिक काल में विभिन्न देशों में उनकी राष्ट्रभाषाओं का है। इस देश के सांस्कृतिक विकास में संस्कृत का कितना ऊंचा स्थान है, यह समझने में किसी को कठिनाई नहीं होनी चाहिए।

मेरा यह अभिप्राय नहीं कि हम संस्कृत को फिर से अन्तर्प्रादेशिक आसन पर पदासीन कर दें या ऐसा कर सकते हैं, यद्यपि मुझे ज्ञात है कि कुछ लोगों द्वारा इस प्रकार की मांग भी की गई है। इस सम्बन्ध में संस्कृत की व्यावहारिकता तथा वांछनीयता के बारे में कुछ न कह कर मैं इतना ही निवेदन करना चाहूंगा कि आज की परिवर्तित स्थिति में भी संस्कृत का अध्ययन इस देश के लिए निस्सन्देह बहुत मूल्यवान सिद्ध होगा। इस भाषा का पद हम चाहे जो निर्धारित करें यह तो स्वीकार करना ही होगा कि यह हमारी सभी आधुनिक भाषाओं की आधारशिला है।

विभिन्न भारतीय देश एक दूसरे से काफी दूर स्थित हैं और उन सबकी अपनी अपनी विशेषताएं, रीति-रिवाज और परम्पराएं है। यह सब होते हुए भी जब उत्तर भारत का निवासी दक्षिण भारत के जीवन में उसी प्रकार की आस्थाएं और कर्मकाण्ड देखता है, तो वह मुग्ध हुए बिना नहीं रह सकता। कुछ महीने हुए जब मैं वन-महोत्सव के दिन संयोग से हैदराबाद के किसी ग्राम में था मुझे वृक्षारोपण के लिए कहा गया। वृक्ष लगाने से पूर्व जिन मन्त्रों आदि का उच्चारण किया गया और जिस विधि का अनुसरण किया गया, वह ठीक वही थी जो प्रति वर्ष मैं राष्ट्रपति भवन में देखता हूं। यह सादृश्य उन सभी रिवाजों के सम्बन्ध में देश में भी पाया जाता है, जिन्हें हम सोलह संस्कार कहते हैं और जिनका पालन करना प्रत्येक हिन्दू अपना कर्तव्य समझता है।

यही कारण है कि आपकी परिषद् का प्रमुख उद्देश्य संस्कृत के अध्ययन को प्रोत्साहन देना और इस देश में उस भाषा को उसके महत्व के अनुरूप स्थान दिलाना है। निस्सन्देह, इस सभा में उपस्थित विद्वत्मण्डली इस विषय पर विवेचनात्मक रूप से विचार करेगी और इस दिशा में देश का पथ-प्रदर्शन कर सकेगी। इस सत्प्रयास में मैं हृदय से परिषद् की सफलता की कामना करता हूं।

-डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, पूर्व राष्ट्रपति

सरदार पटेल जयन्ती (31 अक्टूबर)

आप अपने अभूतपूर्व कार्यों के कारण लौह पुरुष कहलाए। आपकी सोच-मानसिकता कांग्रेस में रहते हुए भी सावरकरवादी थी। आपने 561 देसी रियासतों का भारत में विलय किया जिस पर आज तक कोई विवाद नहीं है।

आपको शेख अब्दुल्ला पर कतई विश्वास नहीं था। वे राज्य का मुख्यमंत्री किसी हिन्दू नेता को बनाना चाहते थे। ताकि हिन्दू का प्रतिशत 48 से बढ़कर 60 से अधिक हो जाए। महाराजा हरीसिंह भी सरदार पटेल से सहमत थे। पटेल ने नेहरु से स्पष्ट कहा था कि राज्य को मुस्लिम बहुल रखकर भयंकर गलती की जा रही है।

पटेल जी नेहरु की तिब्बत सम्बन्धी नीति से भी सहमत नहीं थे। उन्होंने चीन की विस्तारवादी और कुटिल चालों से नेहरु को सावधान किया था। 1950 में सरदार पटेल की मृत्यु हो जाने के बाद चीन ने 1951 से तिब्बत पर शिकंजा कसना शुरु किया और 1959 में पूरा तिब्बत छीन लिया।

1947 में 15 राज्यों में से 12 राज्यों की कांग्रेस कमेटियां सरदार पटेल को स्वतन्त्र भारत का प्रथम प्रधानमंत्री बनाना चाहती थीं किन्तु गांधी जी ने दबाव डालकर नेहरु को प्रथम प्रधानमंत्री बनवा दिया।

आपने सोमनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार/भव्य-निर्माण भारत सरकार की मीटिंग में प्रस्ताव पारित कराया। उन्होंने नेहरु-गांधी और मुस्लिमों के विरोध की कोई परवाह नहीं की।

यदि आप कुछ वर्ष और जीवित रहते तो अयोध्या- मथुरा-वाराणसी के मंदिरों का जीर्णोद्धार भव्यनिर्माण निश्चित रूप से भारत सरकार द्वारा करा देते। वे तुष्टीकरण के विरोधी थे। उन्हें मुस्लिम वोट बैंक की कतई चिन्ता नहीं थी।

उन्होंने कहा था कि भारत में केवल एक मुस्लिम ही राष्ट्रवादी है जिसका नाम है- जवाहर लाल नेहरु।

सरदार पटेल की जयन्ती सर्वत्र जोर-शोर से मनाई जानी चाहिए और उनका अनुयायी बनना चाहिए।

भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी गुजरात में विश्व की सबसे ऊँची सरदार पटेल की प्रतिमा का अनावरण 31 अक्टूबर 2018 को कर रहे हैं तदर्थ बधाई।

-वीरेन्द्र कुमार अग्रवाल बुलन्दशहर

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-10-2018 (pages 12) Posting Date : 2-3 Every Month
Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/2018-20

सेवा में,

शुद्धि समाचार

अक्टूबर – नवम्बर – 2018

शुद्धि सभा के प्रचारकों की कार्यशाला का सचित्र वर्णन

राष्ट्रभक्तों का संगठन लोकसभा चुनाव–2019

राष्ट्र निर्माण पार्टी

(भारत निर्वाचन आयोग द्वारा पंजीकृत राजनैतिक दल)

ठाकुर विक्रम सिंह
राष्ट्रीय अध्यक्ष

डॉ. आनंद कुमार, IFS (Retd.)
राष्ट्रीय महासचिव

राष्ट्र निर्माण पार्टी का घोषणा पत्र

* सभी युवाओं को योग्यतानुसार रोजगार की व्यवस्था करेंगे। * परिवार नियोजन सभी के लिए समान रूप से लागू होगा।
* महिलाओं की सुरक्षा, सशक्तिकरण एवं समाज में उनका विशेष सम्मान सुनिश्चित किया जाएगा।
* किसानों, मजदूरों व गरीब आदिवासी एवं हरिजनों की समस्याओं का समाधान करने के लिए स्मार्ट गांव की योजना लागू की जाएगी।
* गौ हत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लगाएंगे। * गोचर भूमि मुक्त कराएंगे। कश्मीर में धारा 370 समाप्त करेंगे।
* भ्रष्टाचार समाप्त करेंगे। * वर्तमान में जातिगत आधार पर लागू आरक्षण समाप्त कर आर्थिक आधार पर लागू किया जाएगा।

राष्ट्र निर्माण पार्टी के सदस्य बने, अपना नाम व पता SMS करें :
9213956360, 9599107207 वाट्सअप नंबर - 9650370532
www : rashtranirmanpartyl.com

केन्द्रीय कार्यालय :-

ए-41, लाजपत नगर-2 (निकट मेट्रो स्टेशन) नई दिल्ली-110024
फोन : 011-45791152, 29842527, 9599107207
Email : rashtranirmanparty@gmail.com

मुद्रक, व प्रकाशक – रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली–55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली–7 दूरभाष : 23857244 से प्रकाशित। सम्पादक : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, सह–सम्पादक: डॉ. देवेश प्रकाश आर्य